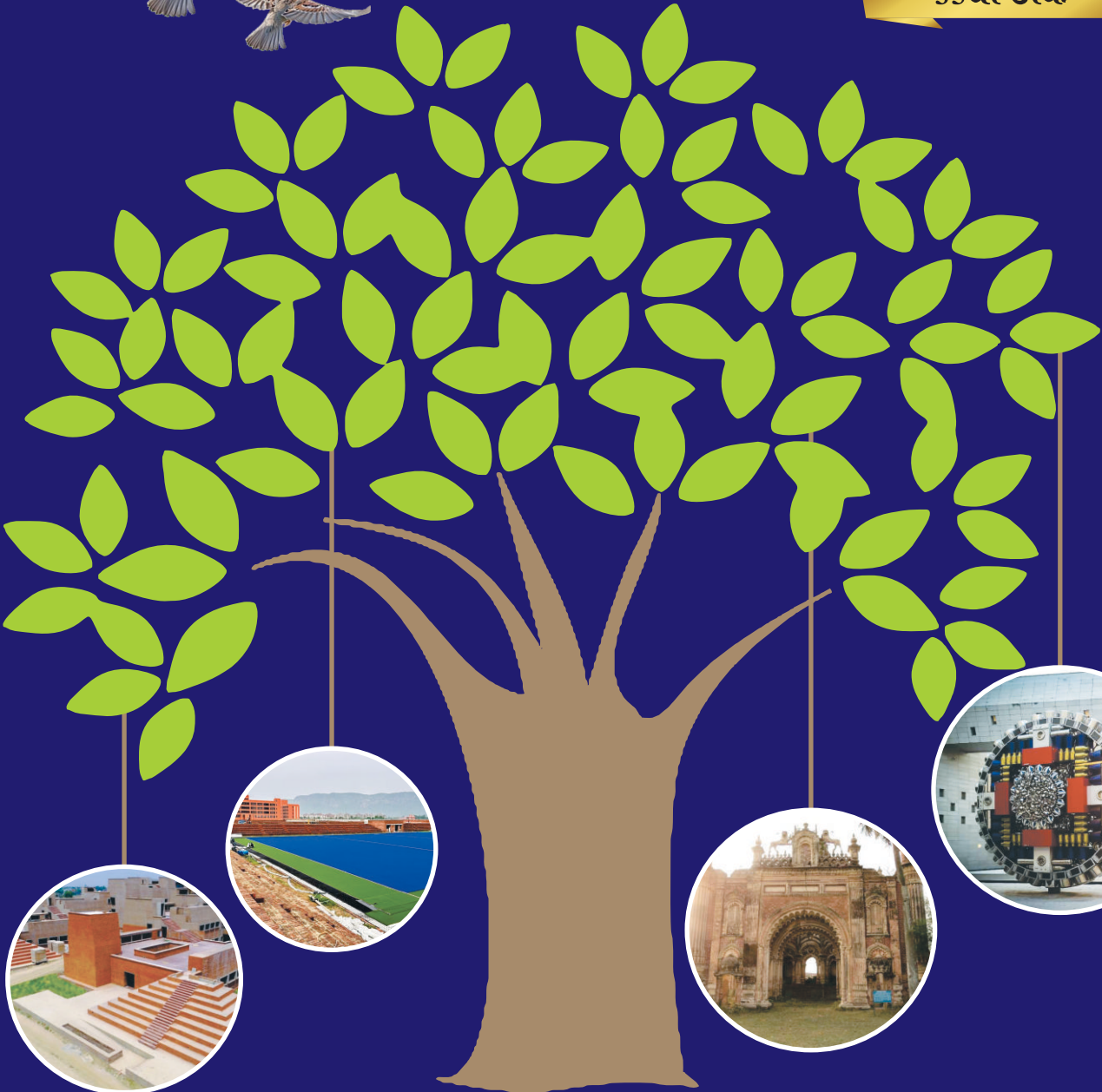




SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चेतना

35वाँ अंक



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना-800 001

हिंदी पखवाड़ा 2023 के दौरान
दीप प्रज्वलित करते हुए उच्च अधिकारीगण



हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 34वें अंक का विमोचन



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वार्षिक हिंदी पत्रिका चेतना

अक्तूबर, 2023 से सितंबर, 2024

35वां अंक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
महालेखाकार भवन
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना - 800 001

चेतना के इस 35वें अंक में प्रकाशित सभी रचनाएँ लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिये गये विचार/मन्तव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति संपादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन : चेतना

प्रकाशक : कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना,
महालेखाकार भवन, वीरचंद पटेल मार्ग, पटना-800 001

35वां अंक : अक्तूबर, 2023 से सितंबर, 2024

मुद्रक : पटनेश्वरी प्रिन्टर

चेतना परिवार

संरक्षक

श्री पुष्कर कुमार

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति

श्री मनमीत कुमार

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

श्री संजय कुमार सिन्हा

उपमहालेखाकार (पेंशन एवं जी.ई.)

श्री देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव

उपमहालेखाकार (लेखा, वी.एल.सी. एवं कार्य)

प्रधान संपादक

श्री अरविंद प्रसाद सिंह

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री श्रीराम पाण्डेय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक

श्री सुनील कुमार

हिंदी अधिकारी

उप संपादक

श्री सन्नी कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

संपादन सहयोग

श्री उदय भान विश्वकर्मा

कनिष्ठ अनुवादक

श्री धीरज कुमार

वरिष्ठ लेखाकार

मुद्रण कार्य

पटनेश्वरी प्रिन्टर

चेतना परिवार



- बाएँ से दाएँ (बैठे हुए) : श्री देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव (उपमहालेखाकार), श्री संजय कुमार सिन्हा (उपमहालेखाकार), श्री पुष्कर कुमार (महालेखाकार), श्री मनमीत कुमार (वरिष्ठ उपमहालेखाकार)
- बाएँ से दाएँ (खड़े) : श्री उदय भान विश्वकर्मा (कनिष्ठ अनुवादक), श्री धीरज कुमार (वरिष्ठ लेखाकार), श्री श्रीराम पाण्डेय (वरिष्ठ लेखा अधिकारी), श्री अरविन्द प्रसाद सिंह (वरिष्ठ लेखा अधिकारी), श्री अजय कुमार शर्मा (वरिष्ठ लेखा अधिकारी), श्री सुनील कुमार (हिंदी अधिकारी), श्री सन्नी कुमार (कनिष्ठ अनुवादक)

महालेखाकार भवन

बिहार, पटना





हिंदी दिवस 2024

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

**अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार**



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)



महालेखाकार का संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है। यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने के साथ-साथ कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में करने के लिए भी प्रेरित करती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने में कार्यालयीन पत्रिकाओं का काफी योगदान होता है। किसी भी देश की मौलिक सोच और रचनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा बनाए गए "12 प्र" यथा प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, पदोन्नति, प्रतिबद्धता एवं प्रयास को अंगीकार कर हिंदी का विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।



चेतना के 35वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई।

शुभकामनाओं सहित !

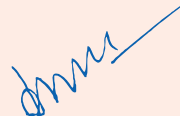
(पुष्कर कुमार)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार का संदेश

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक का प्रकाशन हो रहा है जो इस बात का द्योतक है कि कार्यालय राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास के प्रति सजग एवं प्रयत्नशील है। इस अंक में सम्मिलित सभी रचनाएँ रोचक एवं सराहनीय हैं। यह पत्रिका कार्यालय के सभी सदस्यों, पाठकों एवं राजभाषा हिंदी के बीच एक रचनात्मक संपर्क का कार्य कर रही है। इस अंक में अतिथि रचनाकारों के रचनाओं को भी स्थान दिया गया है जिससे पत्रिका की गुणवत्ता बढ़ी है।



पत्रिका में योगदान देने वाले समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।


(मनमीत कुमार)

उपमहालेखाकार का संदेश

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए गर्व का क्षण प्रदान करता है। यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। पत्रिका हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में सहयोग प्रदान करती है। साथ-ही कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के लिए कार्मिकों को प्रोत्साहित भी करती है। हिंदी जन-जन की भाषा है। कार्यालयीन कार्यों में संप्रेषण की दृष्टि से हिंदी का प्रयोग अधिक प्रभावशाली सिद्ध होगा।



पत्रिका प्रकाशन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी की समृद्धि में अपना पूरा सहयोग प्रदान करेगी।

धन्यवाद।

Sanjay Kumar Sinha
(संजय कुमार सिन्हा)

उपमहालेखाकार का संदेश

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए बहुत गौरवान्वित करने वाला है। पत्रिका का मूल उद्देश्य जागृति और विचारों का सही सम्प्रेषण करना होता है। यह पत्रिका इस पर खरा उतरती है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ आकर्षक एवं अद्वितीय हैं। पत्रिका राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कार्यों को करने के लिए कार्मिकों को प्रोत्साहित करती है। कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएँ कार्मिकों के मन के भाव को हिंदी में प्रकट करने हेतु मंच प्रदान करती हैं। इस अंक में समाहित विविध विषयों पर आधारित समस्त रचनाएँ स्तरीय हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी यह क्रम जारी रहेगा।



पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन हेतु रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को हार्दिक धन्यवाद।

देवेन्द्र
(देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव)

संपादकीय

कार्यालय से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाएँ कार्मिकों के अभिव्यक्ति का संवाहक होती हैं। कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 35वें अंक के पदार्पण ने हिंदी के विकास रथ को गति प्रदान किया है। हिंदी का सर्वांगीण विकास क्षेत्रीय भाषाओं को अंगीकृत करके ही संभव हो सकता है। इस क्रम में, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारतीय भाषा अनुभाग का गठन किया गया है, जो देश की विभिन्न मातृभाषाओं एवं हिंदी के परस्पर सहयोग एवं अनुसंधान से इसकी स्वीकार्यता एवं ग्राह्यता को अखिल भारतीय स्तर पर एक नया स्वरूप प्रदान करेगा।



इस अंक में निहित सभी रचनाएँ प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। अतिथि रचनाकारों के रचनात्मक शैली से ओत-प्रोत हिंदी पत्रिका 'चेतना' निरंतर उत्कर्ष की ओर अग्रसर है। रचनाकारों तथा संपादक मण्डल के सदस्यों के प्रयास से ही इस अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाना संभव हो पाया है। पत्रिका के अनवरत विकास हेतु, सभी सुधी पाठकों के सुझाव व अभिमत आमंत्रित हैं।

इस अंक के प्रकाशन में सहयोग हेतु इससे जुड़े समस्त कार्मिक बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा है कि भविष्य में प्रकाशित होने वाले अंकों को भी इसी प्रकार आपके समक्ष प्रस्तुत किया जाता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित!

सुनील कुमार
संपादक



टिप्पणियां हिंदी में लिखिए।
प्रारूप हिंदी में तैयार कीजिए।
शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।



“प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में
जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी,
उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती॥”

- सुभाषचंद्र बोस



“मैं उन लोगों में से हूँ जो चाहते हैं और
जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की
राष्ट्रभाषा हो सकती है।”

- बाल गंगाधर तिलक



“हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति
का सरलतम स्रोत है।”

- सुमित्रानंदन पंत



“हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र
में पिरोया जा सकता है।”

- स्वामी दयानन्द सरस्वती



हिंदी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से
विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।



- डॉ. अमरनाथ झा



परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो,
अपने में अपनी भाषा में उन्नति करो।

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र

आपके पत्र

भारत सरकार
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला - 171 003



Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla 171 003

संख्या: हि.क./बाह्य पत्रिका/1/578091/2024 दिनांक: 08-04-2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी अनुभाग),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना

विषय:- कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 34वें अंक के ई-प्रति की प्राप्ति।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 34वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। इसके लिए बधाई एवं धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित लेख, 'डॉ राजेंद्र प्रसाद-आधुनिक बिहार के धेरणा सोत, गरीबी, अंतर्द्वंद्व, मुकदमा, गौतम बुद्ध, एक छोटा बच्चा, बनें तो ऐसा रत्न टाटा जैसा तथा देश में निकला होगा चाँद' आदि बहुत ही सराहनीय एवं जानकारीपूर्ण हैं। इस के अतिरिक्त कविताएँ, 'भूषण-हत्या एक अभिशाप, मातृभूमि, पापा, कुछ न बदला, मातृभूमि के सपने, नारी तथा ये भारत की नदियाँ' आदि भी काफी उत्कृष्ट एवं रुचिकर लगती हैं। पत्रिका का आवरण तथा पृष्ठ भी अत्यंत सुन्दर हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन और इसके उन्नत एवं सतत प्रगति के लिए ढेर शुभकामनाएँ।

भवदीया,

Signed by Anuradha Sood
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)
(हिन्दी)

Anuradha Sood, SAO(HINDI)-AS, HINDI

Gorton Castle - 171 003, Telephone: 0177-2600411-438, email: agauhimachalpradesh@cag.gov.in
मॉर्टन कैसल - 171003, दूरभाष: 0177-2600411-438



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व लट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओडिशा)



सं. रा.भा.अ./पत्रिका/2023-24

दिनांक-16.02.2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार,
महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग, आर, ब्लाक,
पटना-800001
ईमेल- agaebihar@cag.gov.in

विषय- हिंदी पत्रिका "चेतना" के 34 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका "चेतना" का 34 वें अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	आभा झा	कुछ न बदला
2.	प्रतिमा कुमारी	पापा
3.	राम सिंगार चौहान	गजल
4.	सन्नी कुमार	दुःसपन
5.	संगीता कुमारी	सुखात

इस पत्रिका को सफल एवं उत्तमोत्तम बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,

Signed by Kirti Shree
Date: 27-02-2024 16:20:33

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष सं.-0674-2303511 ईमेल- pdarfyecostr@cag.gov.in / rajbhasha.ecorfy@cag.gov.in

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

संख्या: रा.भा.अ./पत्रिका/1/1005/02/2023-24 दिनांक: 21-11-2023

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
महालेखाकार कार्यालय (लेखा एवं हक),
बिहार, पटना-800001

विषय :- हिंदी गृह पत्रिका 'चेतना' के 34वें अंक सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'चेतना' के 34वें अंक की प्राप्ति हुई, पत्रिका की सज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुन्दर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक एवं भव्य हैं। पत्रिका का आवरण प्रत्यक्ष आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट गरीबी (की समीति कुमार) और कानन की लीला (वीरवीर इन्द्रावत) आदि रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। पत्रिका में समाविष्ट लेखों की गहनता प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट चित्रकारी बहुत ही मनमोहक और शिक्षण है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। कृपया अगले वर्ष खर्चक प्रकाशित किए जाएं।

भवदीया,

RAJESH RAISINGHANI
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
राजस्थान अनुभाग

Signed by Rajesh
Raisinghani
Date: 21-11-2023 17:06:11
Reason: Approved

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
छत्तीसगढ़, विधान सभा रोड,
रायपुर-492005

सं. वार्षिक पत्रिका/मितात/2023/56

दिनांक: 01.11.2023

सेवा में

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
वीर चंद पटेल मार्ग, आर ब्लाक, पटना, बिहार-800001

विषय: राजभाषा गृह पत्रिका 'मितात' के 17वें अंक के प्रेषण संबंध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के अंतर्गत इस कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'मितात' के 17वें अंक की प्रति आपको सादर समर्पित है। आशा है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यालय का यह प्रयास आपको लाभान्वित करेगा। यह पत्रिका इस कार्यालय के वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई है जिसे लिंक-<https://cag.gov.in/uploads/media/2023-065435a1b5e8095-13571977.pdf> के माध्यम से आप डाउनलोड भी कर सकते हैं।

यह भी निवेदन है कि पत्रिका के संबंध में आपके सुझाव या प्रतिक्रिया से हमें अवश्य अवगत कराएँ ताकि अगले अंक को श्रेष्ठतर बनाने में मितानत परिवार के लिए सहायक सिद्ध हो सके।

यह पत्र प्रधान महालेखाकार महोदय के आदेश से जारी किया गया है।

भवदीया,
राजेश राय
(हिन्दी अधिकारी)

आपके पत्र

ह.अ./ले.प./प्रतिभाव/2021-22/37
I/454930/2023

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) बिहार
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना 800001

Indian Audit & Accounts Department
Office of the Principal Accountant
General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800001.

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ हिन्दी अनुभाग
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
बिहार, पटना

विषय:- हिंदी पत्रिका "चेतना" के 34वें अंक का प्रतिभाव।
महोदय

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "चेतना" के 34वें अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद।
चिह्नक रूप में अवतरित आपकी पत्रिका में शामिल सभी लेख, कविता, कहानी आदि जनसंपर्क और
रोचक हैं। उपमहालेखाकार महोदय श्री मनमोहन कुमार जी की कहानी "मरीची" अत्यंत मार्मिक लगी तो
माधव मंडी की कहानी "ईश्वरदारी का पीछा" मनोहक तथा शिक्षाप्रद लगी। श्री सज्जी कुमर तथा श्री
राजेश कुमार रौतन की उनकी रचनाएं क्रमशः "दुर्गमर (एककी)" तथा "भेदभेद (लेख)" के लिए
साधुवाद। श्रीमती सीती कुमारी की रचना "मौलिक धर्म (लेख)" तथा श्री सीती कुमारी की रचना "बिहार
में खाद्य प्रसंस्करण: उद्योग की संभवनाएं" जनसंपर्क लगी। कविता संग्रह में श्री विवेक सिंह की "भूषण
हृदय एक अभिषेक", श्री राम सिंह चौहान की "गजल" तथा श्रीमती प्रतिभा कुमारी की "पंचम"
प्रशंसनीय है।

अभिव्यक्ति में श्री राजभक्त हिंदी की प्रगति में यह पत्रिका अपना योगदान देते रहे, इसी शुभकामना के
साथ समस्त रचनाकारों को सफलता की ओर प्रेरित करने के लिए बधाई एवं अभिनंदन।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

Signed by Manoj Kumar
Date: 04-12-2023 11:19:19
Reason: Approved

Email AG AE Bihar Patna

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 34वें संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।

From : MOUSUMI CHOUDHARY
<mousumi.asm.au@cag.gov.in> Mon, Apr 08, 2024 02:43 PM

Subject : कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 34वें संस्करण की प्राप्ति
के संबंध में।

To : AG AE Bihar Patna <agaebihar@cag.gov.in>
Cc : Deepak Joshi <deepakj.mh3.au@cag.gov.in>

सेवा में,
वरिष्ठ लेखाधिकारी/ हिन्दी अनुभाग,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार
पटना

विषय: कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 34वें संस्करण
की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार,
पटना द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका "चेतना" के 34वें अंक की ई-प्रति प्राप्त
हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ
भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका
के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

"चेतना" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं
सहित।

भवदीया,
मौसमी चौधरी,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम

19प्रतिभावप्रद
1/45626/2023

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, एजकोट-360001
Office of the Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-360001
फोन नं./Phone No: 0261-2441600-06 (पीएफए/PHX) ईमेल नं./Fax No: 0261-2456238
ईमेल/Email: aga@gujarat.cag.gov.in

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/202 3-24/ 77
दिनांक: 2.2.11.2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी/चेतना-अनुभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना - 800001

विषय: हिंदी पत्रिका के प्रतिभाव एवं प्रेषण के संबंध में।
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की गुजरात की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद।
पत्रिका में सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं जनसंपर्क हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी
लेखनीय क्षमताओं के साथ बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी
बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के माध्यम से राजभक्त हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान
अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका के मूल पृष्ठ बहुत ही सुंदर हैं और साज-सज्जा बहुत ही मनमोहक
है, जिससे पत्रिका बहुत ही आकर्षक बन गई है। सर्वसम्पन्न विषयों में भी पत्रिका की सुन्दरता में
वृद्धि की है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इसी शुभकामनाओं के साथ
गुजरात पत्रिका को आपकी पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

Signed by Parekh
Sunilbhai Jivanbhai
Date: 20-11-2023 18:14:04
Reason: Approved

भवदीय
SUNIL J PAREKH
SENIOR ACCOUNTS

OFFICER

1379372
30/11/23

A.G.B.
02 FEB 2024
PATNA

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण
एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
दिल्ली बल्लारी कार्यालय भवन, छात्र तल, निजाम पैरिस,
ए.जे.सी. बोल रोड 234/4, कोलकाता-700020
फोन : 033-2289/411/12/13 फैक्स: 033-2289-4060
ई-मेल: bresd@kolkata.cag.gov.in
दिनांक-31-01-2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभक्त),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार,
महालेखाकार भवन, वीरचंद पटेल मार्ग
पटना - 800001

विषय:- हिंदी पत्रिका "चेतना" के 34वें अंक की अभिलेखीकरण एवं प्रतिक्रिया
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 34वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम
इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। "चेतना" राजभक्त के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अभिलेखीकरणकारियों
की हिन्दी मौखिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर विषय-कमारी का
आलेख "मनोविकास के दौरान नारी सशक्तिकरण" मनमोहन कुमार की कहानी "मरीची", श्रीमती पौषण की
कहानी "चिड़ियों को दाना डालने के बहाने", अर्चना राज का आलेख "पर्यावरण प्रदूषण: विवेक सिंह की कविता
जीवन पर प्रभाव", और अर्चना राज की कविता "बिहार की नदियाँ", अत्यंत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं।
पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं जनसंपर्क तथा पठनीय हैं। इससे सरकार की समझ में
एजेंडा हिन्दी के प्रति लोगों में निरूपण हो सकेगा और उत्साह का माहौल होगा। पत्रिका की जन-संपर्क और
अन्योन्याभिमुखता आभार के साथ धन्यवाद है।

हिन्दी की संप्रदाय के लिए धन्यवाद आपकी पत्रिका "चेतना" के उज्ज्वल भविष्य के लिए "आभार"
पत्रिका की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हरिता 1/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभक्त)

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	शीर्षक	रचनाकार (सर्व सुश्री/श्रीमती/श्री)	पृष्ठ संख्या
1	अपनी हिंदी (कविता)	आभा झा	1
2	मेरा गाँव (लेख)	मनमीत कुमार	2
3	सच्चा सुख (लेख)	चन्द्र किशोर तिवारी	4
4	कमिटमेंट (कहानी)	श्रीराम पाण्डेय	5-6
5	शराबबंदी (कविता)	विश्वपति सिंह	7
6	अधिकार और कर्तव्य-बोध (लेख)	सुनील कुमार	8-9
7	धरती की गोद (कविता)	पुनीत सिंह	10
8	झारखंड भ्रमण (भाग-II) (यात्रा-वृत्तांत)	सन्नी कुमार	11-14
9	बालिका शिक्षा महिला सशक्तिकरण का मूलाधार (लेख)	प्रिती कुमारी	15-16
10	घड़ी ना हार मानी है (गजल)	पूर्णंदु कुमार झा	17
11	कथाशिल्पी, देशभक्त एवं सक्रिय क्रांतिकारी के रूप में अद्वितीय रेणुजी (लेख)	देवेन्द्र प्रसाद	18-19
12	खेल और स्वास्थ्य (लेख)	सोनी कुमारी	20-22
13	विद्यार्थी जीवन (लेख)	आयुष राज	24
14	ये दुनिया मोह-माया का बंधन है (कहानी)	दीपक कुमार	26-28
15	माँ (कविता)	मो. आफताब अंसारी	29

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	शीर्षक	रचनाकार (सर्व सुश्री/श्रीमती/श्री)	पृष्ठ संख्या
16	मानसून सत्र की आगाज (लेख)	देव प्रताप सिंह	30-31
17	ग्लोबल वार्मिंग (लेख)	आदित्य राज	33-34
18	पेपरलीक (कविता)	अमिताभ सिंह	35
19	भिक्षा एक सीख (कहानी)	जयप्रकाश विश्वकर्मा	36-38
20	निराशा और मनुष्य (कविता)	प्रतिभा कुमारी	40
21	दादा-पोता का प्रेम (कहानी)	उदय भान विश्वकर्मा	41-43
22	बुरा मैं शिक्षक नहीं माँ.... बुरी ये दुनिया है (कविता)	दीपक कुमार	44
23	लोकतंत्र : आम-जनता की शक्ति का महत्वपूर्ण स्तंभ (लेख)	नरेंद्र कुमार सिंह	45-46
24	ऑनलाइन पढ़ाई का छात्रों पर दुष्प्रभाव (लेख)	सोनल स्वराज	48-49
25	मेघ आए (कविता)	नायला समरीन	50

अपनी हिंदी

पुण्य प्रसूता वसुन्धरा पर सुरसरि सी बहती हिंदी।
समरसता के भाव अनूठे जन-मन में भरती हिंदी॥

तत्सम-तद्भव देशज विदेशज हिंदी के आभूषण हैं,
सरल सहज शब्दों से सज्जित सर्वसुलभ सम्प्रेषण है।
क्षेत्रीयता की सोंधी-सोंधी खुशबू में तिरती हिंदी।
समरसता के भाव अनूठे जन-मन में भरती हिंदी॥

तुलसी सूर कबीर सरीखे सुत अनगिन अनुरागी हैं,
कोटि-कोटि कंठों में बसती माँ हिंदी बड़भागी है।
तृषित हृदय के प्रखर ताप को पल भर में हरती हिंदी।
समरसता के भाव अनूठे जन-मन में भरती हिंदी॥

कभी राम के कोमल पग में ठुमक-ठुमक इतराती है,
कभी कृष्ण की शरणागति में सिसक-सिसक सो जाती है।
अनुगूजित कर मधुर-मधुर स्वर नवपथ पर बढ़ती हिंदी।
समरसता के भाव अनूठे जन-मन में भरती हिंदी॥

विस्तृत हो हिंदी के आंगन नित्य नवल उद्यान खिले,
संस्कृति में संस्तुति हो अपनी और उचित सम्मान मिले।
भारतीयता से अगजग को आभामय करती हिंदी।
समरसता के भाव अनूठे जन-मन में भरती हिंदी॥



आभा झा, अतिथि कवयित्री,
द्वारा अविनाश कुमार ठाकुर,
सहायक लेखा अधिकारी



मेरा गाँव

ग्राम जीवन थोड़ा धीमा है, परंतु उसमें असीम शांति का भाव समाविष्ट है। ग्रामीणों का जीवन सरल होता है, उनके जीवन में ज्यादा ताम-झाम नहीं है। वे एक-दूसरे के साथ प्रेम तथा एकता के साथ रहते हैं। वे रिश्तों को अत्यंत महत्व देते हैं और उसी को बनाए रखने के लिए प्रयासरत रहते हैं। वे अपने पड़ोस में रहने वाले लोगों के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं और उनकी जरूरत के समय उनके साथ खड़े होते हैं। ग्रामीणों में मदद करने की प्रवृत्ति होती है। वे बिना घाटा-फायदा की चिंता किए एक दूसरे का साथ देते हैं। उनकी जरूरतें कम हैं, परंतु एकता के मूल मंत्र को भली-भाँति समझते हैं।

ग्रामीण अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं को विशेष महत्व देते हैं और धार्मिक रूप से उनका पालन करते हैं। पूर्वजों के समय से चली आ रही प्रथा को वे आगे ले जाते हैं। प्रत्येक गाँव में कुछ-न-कुछ अलग प्रथाएँ होती हैं जो दूसरे गाँव से भिन्न होती हैं। गाँवों में त्योहार सामूहिक रूप से मनाए जाते हैं। त्योहारों के दौरान गाँव के सभी लोग एक-दूसरे के साथ मिलकर लुत्फ उठाते हैं, उनमें दुगुनी खुशी की लहर दिखती है। किसी के घर में कोई मेहमान आ जाये तो मानो वह पूरे गाँव का मेहमान बन जाता है। वैसे लोग जो उससे कभी मिले भी नहीं हैं परंतु परिचय होने के बाद इस तरह से व्यवहार करते हैं जैसे सालों से एक-दूसरे को जानते हैं।

गाँवों में लोग ज्यादातर कृषि गतिविधियों से संबंधित कार्य करते हैं या सीधे कहे तो किसान होते हैं। उनमें से कुछ कारीगर भी होते हैं और विभिन्न प्रकार के सुंदर हस्तकला से वस्तुओं को तैयार करते हैं। परंतु ज्यादातर लोग किसान होते हैं। बीज बोने से लेकर फसल की कटाई तक उनका कार्य निरंतर चालू रहता है।

पहले वे वर्षा पर निर्भर होते थे, परंतु आज लगभग हर गाँव में पानी की व्यवस्था है। बीज रोपने के समय वे पर्व की भांति मनाते हैं तथा पूजा-अनुष्ठान करते हैं। किसान अपनी फसल की देख-रेख करता है। फसल की कटाई के बाद आवश्यकता अनुरूप उसका उपयोग या बिक्री किया जाता है।

लोगों के पास जीवन का आनंद लेने के अपने तरीके हैं। आज भी गाँवों में लोग रेडियो सुनते दिखाई देते हैं। कई गाँवों में कुश्ती-दंगल जैसी प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन भी किया जाता है। गाँवों में मैदान की कमी नहीं है। बच्चे एवं युवा उनका उपयोग खेलने के लिए करते हैं। वहाँ की हवा में ताजगी है, जो प्रदूषण मुक्त है। गाँव में बगीचा होना आम बात है और बचपन का एक भाग बगीचे में बितता है। लड्डू नचाना, गिल्ली-डंडा, कबड्डी आदि खेल बच्चों को खूब भाता है।

दुनिया के कई गाँव मूलभूत सुविधाओं जैसे बिजली, स्वच्छता सुविधाओं, अस्पतालों, स्कूलों आदि से रहित हैं, इन सुविधाओं की कमी के कारण ग्रामीणों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अधिकांश ग्रामीण शिक्षा को अधिक महत्व नहीं देते हैं। वे बुनियादी शिक्षा के साथ संतुष्ट हैं जो वे गाँव के स्कूलों में प्राप्त करते हैं। गाँवों में विकास होना चाहिए, परंतु उसकी खूबसूरती पर असर नहीं होना चाहिए। गाँव की ताजी हवा, हरियाली, बगीचे आदि जहाँ एक ओर मन को मोह लेते हैं तो दूसरी ओर हमारे स्वास्थ्य पर भी उनका अनुकूल प्रभाव पड़ता है।



मनमीत कुमार,

वरिष्ठ उपमहालेखाकार

कार्यालय में आयोजित ऑडिट दिवस के समापन समारोह
कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ



सच्चा सुख

हमलोग प्रतिदिन निष्ठापूर्वक धनोपार्जन करने निकलते हैं, कोई नौकरी करते हैं, कोई व्यापार करते हैं तथा धन अर्जन कर घर लाते हैं तथा अपने-अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। वर्तमान युग, अर्थ प्रधान युग है तथा बिना अर्थ के धर्म, काम तथा मोक्ष का द्वार भी अवरुद्ध रहता है। हम खूब सारा धन अर्जन कर बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ, बंगला, अत्याधुनिक सुविधाओं की वस्तुएँ खरीदते हैं, लेकिन आप अनुभव कीजिएगा कि ये सब क्षणिक सुख प्रदान करते हैं कुछ दिन तो यह सब बहुत अच्छा लगता है, लेकिन उसके बाद सबकुछ सामान्य लगने लगता है, फिर हमारे मन की दूसरी इच्छाएँ जागृत होती हैं और हम उसे पाने के प्रयत्न में फिर अपना नौद चैन सब कुछ खोने लगते हैं। इस तरह जीवन पर्यंत हम अपनी मृग-तृष्णा को बुझाने में लगे रहते हैं, लेकिन हमें ऐसे सुख का अनुभव नहीं हो पाता है, जिसके स्मरण मात्र से रोम-रोम हर्षित हो जाए। अर्थात् सच्चे सुख की अनुभूति नहीं हो पाती है।

मैंने एक बार कहीं पढ़ा था कि किसी ने रतन जी टाटा से पूछा कि सर, आपको याद है कि आपको जीवन में सबसे अधिक खुशी कब मिली?

रतन जी टाटा ने कहा :- मैं जीवन में खुशी के चार चरणों से गुजरा हूँ, और आखिरकार मुझे सच्चे सुख का अर्थ समझ में आया। पहला चरण धन और साधन संचय करना था, लेकिन इस स्तर पर मुझे वह सुख नहीं मिला जो मैं चाहता था।

फिर कीमती समान और वस्तुओं को इकट्ठा करने का दूसरा चरण आया। लेकिन मैंने महसूस किया कि इस चीज का असर भी अस्थायी होता है और कीमती चीजों की चमक ज्यादा देर तक नहीं रहती।

फिर आया बड़ा प्रोजेक्ट मिलने का तीसरा चरण वह तब का जब भारत और अफ्रीका में डीजल आपूर्ति का 95 प्रतिशत काम मेरे पास था। मैं भारत और एशिया में सबसे बड़ा इस्पात कारखाने का मालिक था। लेकिन यहाँ भी मुझे वो खुशी नहीं मिली जिसकी मैंने कल्पना की थी।

चौथा चरण वह समय था जब मेरे एक मित्र ने मुझे कुछ विकलांग बच्चों के लिए व्हील चेयर खरीदने के लिए कहा, लगभग 200 बच्चे थे। दोस्त के कहने पर मैंने तुरन्त व्हील चेयर खरीद ली। लेकिन दोस्त ने जिद की कि मैं उसके साथ जाऊँ और बच्चों को व्हील चेयर भेंट करूँ। मैं तैयार होकर उनके साथ चल दिया। वहाँ मैंने सारे पात्र बच्चों को अपने हाथों से व्हील चेयर दी। मैंने इन बच्चों के चेहरों पर खुशी की अजीब-सी चमक देखी। मैंने उन सभी को व्हील चेयर पर बैठे घूमते और मस्ती करते देखा। यह

ऐसा था, जैसे वे किसी पिकनिक स्पाट पर पहुँच गए हों, जहाँ कोई बड़ा उपहार जीतकर शेयर कर रहे हों। मुझे उस दिन अपने अंदर असली खुशी महसूस हुई। जब मैं वहाँ से वापस जाने को हुआ तो उन बच्चों में से एक ने मेरी पैर पकड़ ली, मैंने धीरे से अपने पैर को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन बच्चे ने मुझे नहीं छोड़ा और उसने मेरे चेहरे को देखा और मेरे पैरों को कसकर पकड़ लिया। मैं झुक गया और बच्चे से पूछा तुम्हें कुछ और चाहिए? तब उस बच्चे ने मुझे जो जवाब दिया, उसने न केवल मुझे झकझोर दिया बल्कि जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को भी पूरी तरह से बदल दिया।

उस बच्चे ने कहा था :- मैं आपका चेहरा याद रखना चाहता हूँ ताकि मैं जब आपसे स्वर्ग में मिलूँ तो मैं आपको पहचान सकूँ और एक बार फिर से आपका धन्यवाद कर सकूँ।

उपरोक्त शानदार कहानी का मर्म यह है कि हम सभी को अपने अन्तर्मन में झांकना चाहिए और यह मनन अवश्य करना चाहिए कि इस जीवन, संसार और सारी सांसारिक गतिविधियों को छोड़ने के बाद आपको किस लिए याद किया जाएगा। मृत्यु अटल सत्य है और यह किसी को नहीं छोड़ेगी, हमलोग प्रत्येक स्वांस के साथ मृत्यु के करीब जा रहे हैं, लेकिन हमारा नित्य जीवन का व्यवहार ऐसा होता है जैसे हम अमर होकर आए हैं मृत्यु कभी हमारे लिए आएगी ही नहीं।

हमें यह सदा ध्यान में रखना चाहिए कि हमने जितनी भी धन सम्पत्ति अर्जित की है, मृत्यु उसे एक क्षण में छीन लेगी। केवल एक पुण्य ही है जिसे मृत्यु भी नहीं छीन सकती और यही हमारी अन्तिम यात्रा में हमारे साथ होगी। इसलिए हमें इस लोक के साथ-साथ परलोक हेतु भी कुछ अर्जन करने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए, ताकि हमारे जाने के बाद भी लोग हमारे यादों को दिल में संजो कर रख सकें।

“जीना उसका जीना है जो औरों को जीवन देता है।”



चन्द्र किशोर तिवारी,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

कमिटमेंट

मैं अपनी चिकित्सा हेतु गुड़गांव के एक अस्पताल में डॉक्टर की प्रतीक्षा में था। बगल की सीट पर एक संभ्रांत—सी दिख रही महिला सात-आठ साल की बच्ची को गोद में लिए बैठी थी और उसे लगातार चूमे जा रही थी। जब उस बच्ची की आंखों में आँसू की कुछ बूंदें टपक जाती, तो वह उन्हें अपने आंचल से पोंछ डालती थी और हंसते हुए अपनी बेटी (बच्ची निश्चित रूप से उसकी बेटी ही थी) के गाल और माथे को और दुगुने स्पीड से चूमने लगती। बच्ची के माथे में बाल नहीं थे, न ही उसकी भौंहें ही दिख रही थीं। इसके बावजूद भी वह बहुत ही सुंदर मासूम—सी, बार्बी डॉल जैसी लग रही थी। मेरी पत्नी धीरे से मुझसे बोली कि शायद इस बच्ची को भी कैंसर ही है और इलाज के साइड इफेक्ट से इसके बाल उड़े हुए हैं। मैंने हामी भरी कि हां, शायद ऐसा ही है।

महिलायें भावुक होती हैं तथा बहुत जल्दी किसी से भी आत्मीय हो जाती हैं। मेरे मना करने पर भी पत्नी ने उस महिला से पूछ ही लिया कि उसकी बेटी को हुआ क्या है? महिला कुछ अनमना हो बस इतना ही बोली कि तबियत खराब है। पत्नी को इतने छोटे उत्तर की आशा नहीं थी, इस कारण वह झंप—सी गई और शायद नाराज भी हुई। मुझे मुस्कुराता हुआ देखकर और भी ज्यादा शरमा गई।

कुछ ही देर बाद हॉस्पिटल की परिचारिका व्हील चेयर पर बैठाकर बच्ची को ऑपरेशन थिएटर में ले गई तो वह महिला डबडबाती आंखों से मेरी पत्नी को बताने लगी कि उसकी बेटी को ब्लड कैंसर है और डॉक्टर्स के अनुसार उसकी जिंदगी ज्यादा दिन की नहीं। यह कहते हुए जोर—जोर से फफकने लगी। रोते—रोते उस अभागी ने मेरी पत्नी से क्षमा मांगते हुए कहा कि अपनी बेटी के सामने मैं यह इसलिए नहीं बताती हूँ कि कहीं वह और ज्यादा न डर जाये और जितने दिन की जिंदगी बची है, वह भी.....। उसके करुण क्रंदन से हम दोनों भी द्रवित हो गये। पत्नी तो इस प्रकार रोने लगी जैसे उस बिटिया की मां ही हो।

दूर की कुर्सी पर एक आदमी किसी बच्चे की छोटी—सी लाल टोपी को अपने सीने से चिपकाये लगातार आंसू पोछे जा रहा था। उसके आस—पास

कोई भी नहीं था, जिससे यह पता चले कि बात क्या है। संभवतः उस बेचारे का भी कोई इसी हॉस्पिटल में गंभीर बीमारी के कारण एडमिट हो और अवश्यंभावी आशंका से वह द्रवित हो रहा हो।

हॉस्पिटल में इस तरह के दृश्य न चाहते हुए भी देखने पड़ते हैं। कहीं से रोने की आवाज, तो कहीं से कराहने की। मन अत्यंत द्रवित हो जाता है। परंतु दुनिया की यही तो नियति है, जिसका भी जन्म हुआ है, अपने भाग का भोग भोगते हुए उसे एक दिन इस दुनिया से चल देना है। यद्यपि यह परम सत्य है और हम सभी जानते हैं, परंतु इसे स्वीकार करना मानवमात्र के वश में नहीं होता। जब किसी अपने के साथ ऐसा घटित होता है, तब यह स्वीकारोक्ति, यह दार्शनिकता काम नहीं आती।

खैर, कुछ देर बाद जब मैं पत्नी के साथ ऑपरेशन थिएटर के पास पहुंचा तो वहीं वह महिला भी बैठी थी। महिला के बगल वाली कुर्सी पर टोपी लिए वह आदमी भी था और लगातार रोये जा रहा था। वहां उन दोनों को एक साथ देख हम दोनों को बहुत ही आश्चर्य हुआ।

मेरी पत्नी की आत्मीयता और आश्चर्यवृत्ति देख वह अभागी महिला अपनी असह्य पीड़ा को दबाते हुए बताई कि ये मेरे पति हैं। उसी समय पता नहीं क्यों, वह आदमी वहां से उठकर कहीं चला गया। पत्नी की जिज्ञासा और बढ़ गई और उसने धीरे से पूछ ही लिया कि फिर वहां ये आपसे दूर क्यों बैठे थे?

बेटी की बीमारी का पता चलने के बाद से ये हमेशा रोते रहते हैं, परंतु डॉक्टर द्वारा यह चेतावनी दी गई है कि बच्ची को बिल्कुल भी इस बीमारी का पता नहीं चलना चाहिये, नहीं तो इसकी जितनी आयु बची है, वह भी खतरे में पड़ जायेगी। मेरे लाख समझाने के बावजूद भी कि कलेजे



पर पत्थर रखकर उसके सामने मत रोइये, बेटी को देखते ही ये फफकने लगते हैं। बताते-बताते वह स्वयं बिलखने लगी।

अपने को संभालते हुए वह पुनः बोली— मैं भी अपनी गुड़िया को देख कैसे अपने को रोक पाती हूँ, यह ईश्वर ही जानते हैं। कहते-कहते उसकी आंखें डबडबा गईं। आंसू पोंछ मेरी पत्नी को पुनः बताने लगी— अब मैं इन्हें कसम दे दी हूँ कि जबतक हमारी गुड़िया खेलने.... नहीं-नहीं, अब तो वह बिल्कुल घर से बाहर नहीं जा पाती, अपने शब्दों को सुधारते हुए दोहराई कि जबतक हमारी गुड़िया सो न जाये, ये उसके समीप नहीं आयेंगे और आयेंगे भी तो रोयेंगे बिल्कुल नहीं। इसलिये ये वहां भी हम दोनों से दूर बैठे थे, ताकि गुड़िया उनकी आंसू देख डर न जाये। बेटी जब पापा-पापा पुकारती है, अपने आंसू पोछ उतने समय के लिये, जबतक आंसू दुबारा न आ जाय, उसके पास रहकर चले जाते हैं।

मैं जानती हूँ कि मृत्यु की ओर जाती हुई

हमारी गुड़िया से दूर रहकर इस कसम को निभाने में इनपर क्या बितती होगी, परंतु जिस दिन से डॉक्टर ने निर्देश दिया है, एक दिन भी इन्होंने अपनी कसम नहीं तोड़ी है।

इस बीच रोता हुआ आदमी वापस आ गया था और ऑपरेशन थिएटर की ओर लगातार देखे जा रहा था। छोटी-सी लाल टोपी को वह इस प्रकार अपने हृदय से चिपका लिया था, जैसे वह उसकी बेटी ही हो।



श्रीराम पाण्डेय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



शराबबंदी

बंद बा शराब तबो, मिले गली गलिया,
पियवा शराब पी के, गिरे रोज नलिया-2

भोरहीं से उठी दिन भर, नशा में रहेलन,
कतनो मनाई बाकी, बात ना मानेलन।
भर गाँव घूमी घूमी, देलन सबके गरिया,
पियवा शराब पी के, गिरे रोज नलिया।

सरकारी नियम के रोज, गाला घोंटाता,
शहर गाँव में दारु, खूब बिकाता।
ऑनलाइन डिलीवरी, मिले दिन रतिया,
पियवा शराब पी के, गिरे रोज नलिया।

थाना के कमाई बढ़, गईल दस गुना,
पूछला प कहे जेल, खाली बा कहूना।
छोड़ देता थाना सबके, लेके गोट मलिया,
पियवा शराब पी के गिरे रोज नलिया।

बंद बा शराब तबो, मिले गली गलिया,
पियवा शराब पी के गिरे रोज नलिया-2

माई रोअस, बाबू रोअस, रोअस भाई बहनिया,
मेहरी के रोवत-रोवत, फुलल बा पपनिया।
बाल बच्चा पढ़त नईखन, बिगड़ जाता हलिया,
पियवा शराब पी के, गिरे रोज नलिया।

50 के दारु, 500 में बिकाता,
बंद बा शराब एह से, टैक्स ना लिया ता।
राजकोष के घाटा होखे, खाली गरीब के थरिया,
पियवा शराब पी के, गिरे रोज नलिया।

गाय बेचलन, भईस बेचलन, बेचलन बधरिया,
दारु पिये खातिर बेचलन, मेहर के जेवरिया।
सब कुछ बेच भीख माँगे लेके डलिया,
पियवा शराब पी के, गिरे रोज नलिया।

बंद बा शराब तबो, मिले गली गलिया,
पियवा शराब पी के, गिरे रोज नलिया-2



विश्वपति सिंह,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

अधिकार और कर्तव्य-बोध

भारत की पावन भूमि पर जन्म लेना सौभाग्य की बात है। पुरातन काल से ही यह भूखण्ड लोक-कल्याण, अधिकारों की सुरक्षा और कर्तव्य-पालन के प्रति सजग रहा है। चाहे वैदिक काल से लेकर मध्य काल तक का गुरु-शिष्य परंपरा हो, राजतांत्रिक शासन की लोक कल्याणकारी व्यवस्थाएं हों अथवा विदेशी आक्रांताओं के भारतीय शासन-व्यवस्था पर पकड़ और प्रभाव के पूर्व का समय हो, प्रत्येक कालखण्ड पर औरों के अधिकार और स्वयं के कर्तव्य-बोध की अमिट छाप अंकित है। हालाँकि, कालांतर में, और विशेषतः विदेशी आक्रांताओं के भारत आगमन के पश्चात् इस परंपरा का क्रमिक क्षरण होने के साथ-ही विषम परिस्थितियों का निर्माण हुआ।

भारत में मूलतः कल्याणकारी व्यवस्था के प्रचलन के बावजूद ऐसा नहीं कहा जा सकता कि अन्याय अस्तित्व में था ही नहीं। यदि ऐसा होता, तो न्याय-व्यवस्था की कोई परंपरा नहीं होती। लेकिन भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही न्याय-व्यवस्था की परंपरा रही है, यद्यपि समयानुसार यह व्यवस्था परिवर्तित होती रही है। किसी भी न्याय-व्यवस्था की सफलता के लिए उसके मूल में नैतिकता, अधिकारों की सुरक्षा और कर्तव्य-बोध का होना अपरिहार्य है।

हमारी पुरातन न्याय-व्यवस्था इन सभी

पहलुओं को अपने में समाहित कर न्याय की एक त्वरित प्रक्रिया का उदाहरण प्रस्तुत करती है। त्वरित और उचित न्याय का हो पाना तभी संभव है, जब शासन-व्यवस्था के प्रथम व्यक्ति से लेकर न्यायविदों तक और उस व्यवस्था से जुड़े अंतिम व्यक्ति तक में, दूसरों के अधिकारों के प्रति सजगता और स्वयं के कर्तव्य के प्रति निष्ठा का भाव हो।

प्राचीन भारतीय न्याय-व्यवस्था का उद्देश्य केवल दोषियों को दंडित करने तक सीमित नहीं था, अपितु समाज में संतुलन और सद्भाव बनाए रखने का साधन भी था। इसका उद्देश्य सभी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के साथ-साथ किसी भी प्रकार के अन्याय को रोकना था। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की गहराई में न्याय-व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान रहा है जिसका विकास समाज के नैतिक और धार्मिक मूल्यों के आधार पर हुआ। कई प्राचीन ग्रंथों में न्याय के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन दृष्टिगोचर होता है; जिसमें न्यायालयों के गठन, न्यायधीशों के गुण एवं उनके कर्तव्य तथा विभिन्न अपराधों के लिए दंड के निर्धारण से संबंधित विषयों का विवरण उपलब्ध है। एक ओर जहाँ ग्राम स्तर पर पंचायती व्यवस्था के तहत चयनित पंच स्थानीय मुद्दों का समाधान करते थे, वहीं उच्च स्तर पर राजा के अधीन आनेवाले न्यायालयों द्वारा गंभीर

मामलों का निपटारा किया जाता था। इस व्यवस्था में न्यायधीशों के लिए सत्य, धर्म और न्याय के प्रति समर्पण जैसे नैतिक गुणों का होना आवश्यक था ताकि वे निष्पक्षता से निर्णय ले सकें।

प्राचीन भारतीय न्याय-व्यवस्था का मूल-मंत्र समाज और न्याय में संतुलन बनाए रखना था। यह व्यवस्था न केवल कानूनी दृष्टि से महत्वपूर्ण थी, बल्कि समाज के नैतिक और धार्मिक मूल्यों को भी दर्शाती थी। आधुनिक न्याय-प्रणाली में भी प्राचीन भारतीय न्याय-व्यवस्था के अनेक तत्वों का समावेश प्रतिबिंबित होता है, जो यह दर्शाता है कि न्याय का सिद्धांत समय के साथ परिवर्तित और परिवर्धित होता रहा है।

वर्तमान संवैधानिक और न्याय व्यवस्था की दृष्टि से अधिकार और कर्तव्य बोध

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान द्वारा भारतीय नागरिकों के लिए उनके अधिकारों और एक नागरिक के रूप में उनके कर्तव्यों का एक स्पष्ट ढांचा प्रदान किया गया है। प्राचीन भारतीय न्याय-व्यवस्था के बाद, भारत ने एक आधुनिक संवैधानिक और न्यायिक ढांचे को अपनाया है, जो न केवल नागरिकों के कानूनी अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करता है, अपितु उनके कर्तव्यों के प्रति भी जागरूकता बढ़ाता है।

अधिकारों का महत्व

भारतीय संविधान में अनेक ऐसे अनुच्छेद समाहित किए गए हैं जिनमें मौलिक अधिकारों का उल्लेख किया गया है। ये अधिकार नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता और न्याय के प्रति आश्वस्त करते हैं। इनमें से कुछेक मौलिक अधिकार यथा जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार; समानता का अधिकार; वैचारिक अभिव्यक्ति, विश्वास और धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार; सांविधानिक उपचार का अधिकार आदि देश के नागरिकों को स्वच्छंद जीवन जीने का अधिकार प्रदान करने के साथ-ही उनके कानूनी हितों की सुरक्षा को भी सुनिश्चित करते हैं।

कर्तव्यों का महत्व

भारतीय संविधान में नागरिकों के कर्तव्यों का भी उल्लेख किया गया है। ये कर्तव्य नागरिकों को अपने अधिकारों का उपयोग करते समय जिम्मेदारियों

का भी ध्यान रखने के लिए प्रेरित करते हैं। इनमें मूलतः प्रत्येक नागरिक द्वारा संविधान का सम्मान और उसका पालन किया जाना; राष्ट्र के प्रति निष्ठा और देश की अखंडता की रक्षा करना; सभी नागरिकों के साथ समानता और न्याय का व्यवहार करना; प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और पर्यावरण की रक्षा से संबंधित तत्व समाहित हैं।

अधिकार और कर्तव्य का संतुलन

वर्तमान संवैधानिक और न्याय-व्यवस्था में अधिकारों और कर्तव्यों का संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। अधिकारों का उपयोग करते समय नागरिकों को यह समझना चाहिए कि उनके कर्तव्य भी हैं। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति अपने अभिव्यक्ति के अधिकार का उपयोग करता है, तो उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी अभिव्यक्ति दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन न करे।

निष्कर्ष

भारतीय न्याय-व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। न्यायालयों में नागरिकों को अपने अधिकारों के लिए न्याय प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इसके अलावा, न्यायालयों द्वारा दिए गए निर्णयों से समाज में अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता बढ़ती है।

वर्तमान संवैधानिक और न्याय-व्यवस्था ने प्राचीन भारतीय न्याय व्यवस्था की नींव पर एक मजबूत और समृद्ध ढांचा तैयार किया है। अधिकारों और कर्तव्यों का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है, ताकि समाज में न्याय, समानता और स्वतंत्रता का वातावरण बना रहे। नागरिकों को अपने अधिकारों का उपयोग करते समय अपने कर्तव्यों का भी ध्यान रखना चाहिए, जिससे एक स्वस्थ और समृद्ध समाज का निर्माण हो सके।



सुनील कुमार,
हिंदी अधिकारी

धरती की गोद

रो रही है धरती, दे जरा तू ध्यान,
धरती की ही गोद में, तू पल रहा है इंसान।

सुहानी हवा के चादर में, बीतती थी हर रात,
सुबह गौरैया उठाती थी, मीठी एक मुस्कान के साथ,
पर आज सब बदल गया, चाहे बने हम अंजान,
धरती की ही गोद में, तू पल रहा है इंसान।

जलवायु अब बदल गयी, बर्फ की चादर पिघल रही,
सूर्य की तेज किरणें, कई जीवन को निगल रही,
वृक्ष की जड़ें काट कर, सासों की कमी पड़ रही,
हमने खुद इसे बिगाड़ा है, चीख-चीख धरती कह रही,
विनती समझ प्रकृति की, या समझ इसे एहसान,
धरती की ही गोद में, तू पल रहा है इंसान।

धरती की सुरक्षा करो, कर्तव्य ये हमारा है,
बदलाव की बरसात हो, संकल्प ये हमारा है,
वृक्षारोपण शुरू करो, समय नहीं गंवाना है,
जल संरक्षण ही जीवन का, एकमात्र सहारा है
धरती को बचाने में, हम सबका हो योगदान
धरती माँ के कोख से हम सभी हैं संतान।

रो रही है धरती, क्यूँ बन रहा नादान
धरती की ही गोद में, तू पल रहा है इंसान।



पुनीत सिंह,
आशुलिपिक

झारखंड भ्रमण (भाग-2)

छिन्नमस्तिका मंदिर को रजरप्पा मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर में माता काली अपने कटे हुए सर को लेकर अपनी दो सहेलियाँ डाकिनी तथा सकिनी के साथ खड़ी हैं। माँ भवानी के गर्दन से खून की तीन धाराएँ निकल रही हैं, साथ ही उनके एक हाथ में तलवार तथा दूसरे हाथ में अपना कटा हुआ सर पकड़ी हुई हैं। माँ गले में मूँड माला धारण की हुई हैं तथा उनके तीन नेत्र भी हैं। उनका यह विकराल स्वरूप मंदिर में भव्यता के साथ विराजमान है। मंदिर में अवस्थित माता का यह दृश्य अत्यंत ही भयावह है। परंतु जब इसके पीछे की कहानी का पता चलता है तो यह दृश्य माँ की करुणामयी रूप को चरितार्थ करता है।

ऐसा माना जाता है कि देवी छिन्नमस्तिका

अपनी दो सहेलियों जया और विजया के साथ नदी में स्नान के लिए गई थी। तभी दोनों सखियों को बहुत भूख लगने लगी। भूख के कारण उनका शरीर काला पड़ने लगा। दोनों को भूख से तड़पता देख देवी से रहा नहीं गया। उन्होंने अपना सर काटकर सहेलियों को रक्त पान करवाया तथा खुद भी किया। माता के अपने सर को छिन्न कर देने के कारण ही उनका छिन्नमस्तिका नाम पड़ा। छिन्नमस्तिका देवी माँ काली की चंडिका स्वरूप है, जो अच्छाई की बुराई पर जीत का प्रतीक है।

छिन्नमस्तिका मंदिर के पास दामोदर नदी तथा भैरवी नदी का संगम है। इस मंदिर का निर्माण कब हुआ यह रहस्य आज भी बना हुआ है। कोई इसे महाभारत काल का, तो कोई इसे 6000



वर्ष पुराना बताते हैं। इस मंदिर के निर्माण से संबंधित तथ्य आज भी रहस्य बना हुआ है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ मन्तों पूरी होती हैं। इस मंदिर में बलि देने की प्रथा है। यहाँ बकरों की बलि दी जाती है।

हमलोग सुबह 9 बजे मंदिर के पार्किंग में पहुंचे। जैसे ही गाड़ी पार्किंग में रुकी चार-पाँच लोग हम सभी को घेर लिए। वे अपने हाथों में पूजा की सामग्री लिए हुए थे। वे बार-बार कह रहे थे कि उनके यहाँ से पूजा की सामग्री खरीदें। हम लोग जैसे-तैसे उनसे पीछा छोड़ाकर पार्किंग से निकले। हमलोग एक पूजा की सामग्री की दुकान में गए, जो पार्किंग से ज्यादा दूर नहीं था। वहाँ भीड़ नहीं थी। मालूम चला कि पूजा करने से पूर्व मंदिर के पीछे स्थित दामोदर नदी तथा भैरवी नदी के संगम स्थल पर स्नान करना होता है। सभी लोग संगम की ओर चल दिये। नदी में घुटने तक ही पानी था,

पर धारा की गति अच्छी-खासी थी। वहाँ महिलाओं के स्नान करने के लिए स्नानागार बनाया हुआ था। सभी स्नान करने के बाद पूजा सामग्री की दुकान पर गए। वहाँ पूजा सामग्री में पेड़ा, सूखे फल, लचदाना, फूल आदि की एक टोकरी मिल रही थी। सामग्री लेकर हमलोग मंदिर में प्रवेश किए। सबसे पहले वहाँ शिवलिंग की पूजा-अर्चना करनी होती है। मंदिर में श्रद्धालुओं की लंबी कतार लगी हुई थी। उसी भीड़ में धीरे-धीरे हमलोग माँ छिन्नमस्तिका के द्वार पर पहुंचे। माँ का विकराल स्वरूप देखकर मानों सारी थकान दूर हो गई। पूजा करते करते 02 बज गए थे। हमने प्रसाद ग्रहण किया। मंदिर के बाहर कई होटल थे, जिसमें खाने की अच्छी व्यवस्था थी। हमने भोजन किया तत्पश्चात पार्किंग के तरफ चल दिये। करीब 03 बज रहे होंगे और इस तरह से माँ छिन्नमस्तिका के दर्शनोपरान्त हमलोग वहाँ से चल दिये।



बातों-बातों में कहीं और घूमने का प्लान बन गया। रजरप्पा से 135 किलोमीटर पर अवस्थित झुमरी तलैया जाने का प्लान बना। फिर क्या था गाड़ी से कोडरमा जिले के तरफ चल दिया। 'झुमरी तलैया' दो नामों से मिलकर बना है— 'झुमरी' और 'तलैया'। 'झुमरी' नाम यहां के स्थानीय सांस्कृतिक नृत्य 'झुमरी' के नाम से लिया गया है, जबकि 'तलैया' शब्द हिंदी शब्द 'ताल' से आया है, जिसका अर्थ है 'तालाब'। ऐसा माना जाता है कि दामोदर नदी में आने वाली विनाशकारी बाढ़ को रोकने के लिए बनाए गए तलैया बांध के कारण इसके नाम के साथ तलैया जुड़ा। इस बांध का ऐतिहासिक महत्व भी है, क्योंकि यह आजादी के बाद देश में बनाया गया पहला बांध है।

झुमरी तलैया के रेडियो प्रेमी श्रोता विविध भारती के फरमाइशी कार्यक्रमों में सबसे ज्यादा चिट्ठियाँ लिखने के लिए भी जाने जाते थे। लोग अपनी-अपनी पसंद का गाना सुनने के लिए चिट्ठियाँ लिखा करते थे। आजकल तो एफ.एम का जमाना है। यह बात 1950 के दशक की है, जब भारत में टीवी आया नहीं था और केवल रेडियो ही मनोरंजन का जरिया था। उस दौरान विविध भारती लोगों के बीच खासा चर्चित था।

झुमरी तलैया सिर्फ रेडियो श्रोताओं के लिए ही प्रसिद्ध नहीं रहा, बल्कि यह कस्बा एक समय अपनी अभ्रक की खदानों के लिए भी बहुत मशहूर था। 1890 में जब कोडरमा के आसपास रेल की पटरी बिछाई जा रही थी, तभी यहां अभ्रक की खानों का पता चला था। इसके बाद ही यहाँ कई खनन उद्योग अस्तित्व में आए। सबसे ज्यादा अभ्रक रूस को निर्यात किया जाता था, जिसका प्रयोग अंतरिक्ष और सैनिक उपकरणों में किया जाता था।

इस छोटे से झुमरी तलैया में समृद्ध अभ्रक व्यापारियों ने कई विला और आलीशान घर भी

बनाए। 1960 के दशक में तो मर्सिडीज और पोर्श जैसी कारें झुमरी तलैया में दिखना आम-सा हो गया था। इससे मालूम पड़ता है कि अभ्रक का निर्यात होने से लोग यहाँ बहुत समृद्ध थे, जिससे उनके जीवन शैली पर काफी असर पड़ा था। एक समय सबसे ज्यादा फोन कनेक्शन और फोन कॉल करने का रिकॉर्ड भी झुमरी तलैया के नाम है।

करीब 05 घंटे के बाद हम झुमरी तलैया पहुँचे। सबसे पहला काम था वहाँ होटल लेना। सड़क के किनारे दोनों तरफ होटलों की कतारें थी। इससे बयान होता है कि यहाँ शैलानियों का जमावड़ा होता है। कुछ होटलों की व्यवस्था देखने के बाद एक होटल फाइनल हुआ। सब अपने-अपने कमरों में विश्राम करने चले गए। फिर से वेज खाना ढूँढना एक बड़ा टास्क था, क्योंकि वैसा वेज खाना चाहिए था जहाँ केवल और केवल वेज ही बनता हो। जिस होटल में रुके थे, वहाँ वेज-नॉन वेज दोनों बनता था। एक-दो घंटे लगे उस महान होटल को ढूँढने में। खाना पैक कराने के बाद होटल के तरफ चल पड़े। रात को 11 बजे तक सभी ने खाना खा लिया और गहरी नींद में सो गए। सुबह 10 बजे सभी घूमने निकल पड़े। तलैया बांध की ओर गाड़ी चल दी। तलैया बांध दामोदर घाटी निगम द्वारा निर्मित पहला बांध है और हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पॉवर स्टेशन है जो कि बराकर नदी पर बनाया गया है। यह बांध 1200 फीट लम्बा और 99 फीट ऊंचा है जो 36 वर्ग कि०मी० के क्षेत्र में एक सुन्दर और आदर्श झील से घिरा हुआ है। इसके निर्माण का मुख्य उद्देश्य बाढ़ को नियंत्रित करना है और साथ ही बिजली का उत्पादन करना है। इसका सुन्दर प्राकृतिक परिवेश पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यह स्थान बरही से मुख्य सड़क के द्वारा जलाशयों और पहाड़ियों से हो के जाता है। यहाँ बोटिंग की भी सुविधा है। झील का पानी काफी शांत था। सभी ने बोटिंग का आनंद उठाया। दो-तीन घंटे व्यतीत करने के बाद हम यहाँ से होटल के लिए रवाना हुए। खाना खाने के दौरान होटल के एक स्टाफ से मालूम हुआ कि यहाँ

एक प्रसिद्ध मंदिर भी है। माँ चंचला देवी मंदिर, जिसे दुर्गा माँ का ही रूप माना जाता है। यह मंदिर पहाड़ियों के बीच में अवस्थित है। शाम के समय हम वहाँ माँ के दर्शन करने पहुँचे। भीड़ ज्यादा नहीं होने के कारण माँ के दर्शन में देरी नहीं हुई। पूजा-अर्चना करने के बाद हम वापस होटल में आ गए।

यह झारखंड रोडवेज का सफर लगभग 07 दिनों का हो चुका था। थकावट भी हो गयी थी। सब ने घर लौटने का निर्णय लिया। इस तरह अगली सुबह जलपान करने के बाद हमने होटल से

चेकआउट किया और भाया गया होते पटना के मार्ग की ओर चल दिये। गया पहुँचने पर हमने भगवान बुद्ध के दर्शन भी किए। रात्रि 09 बजे के आस-पास हम पटना पहुँच गए। इस प्रकार सफर का अंत हुआ जो अत्यंत मनोरम था। पहाड़, झरने, हरियाली, बांध, झील, वन्य जीवन, सुखद मौसम, मंदिर आदि से झारखंड राज्य सुसज्जित है जो इसे दर्शनीय बनाता है।



सन्नी कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

बालिका शिक्षा महिला सशक्तिकरण का मूलाधार

बालिकाओं को शिक्षित करना सशक्तिकरण का एक सार्थक प्रयास माना जाता है। राष्ट्रीय स्तर पर सर्वशिक्षा अभियान के द्वारा किये जा रहे हस्तक्षेप से महिला सशक्तिकरण को एक नया बल मिला है। भारत जैसे विकासशील देश में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की साक्षरता दर में निरंतर हो रही वृद्धि को बालिका शिक्षा का एक प्रतिफल माना जा सकता है। 2022 के सर्वेक्षण के अनुसार हमारे देश में मात्र 64.16 प्रतिशत महिलाएँ शिक्षित हैं। इसे अभी भी चुनौती माना जा सकता है। शिक्षा व्यक्ति के अंदर की क्षमताओं को उजागर करने में सक्षम होता है, तभी तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे प्रयास का एक पहलू बालिका शिक्षा है तो दूसरा महिला सशक्तिकरण। मानव समाज में स्त्री व पुरुष दोनों गाड़ी के दो पहियों के समान हैं। दोनों को विकास हेतु अधिकाधिक क्षेत्रों में समान रूप से अवसर भी प्राप्त हैं। फिर भी देश की आजादी के 76 वर्ष व्यतीत होने के पश्चात भी महिला शिक्षा में कोई विशेष उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ। इसी कारण भारतीय सामाजिक स्वरूप व चेतना में जो अपेक्षित परिवर्तन होना चाहिए, वह नहीं हो पाया है। मानव संसाधन का पूर्ण विकास, बच्चों के चरित्र व देश के सतत विकास के लिए स्त्री शिक्षा पुरुषों की शिक्षा से अधिक उपयोगी व महत्वपूर्ण है। इस आधार पर यह कहा गया है कि पुरुषों की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा है, जबकि स्त्री शिक्षा पूर्ण परिवार की शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा

ही स्त्री पूरे घर को स्वर्ग बनाती है। इसलिए महिला शिक्षा को विकास का आधार स्तम्भ माना गया है। अतः महिला शिक्षा के अधिकाधिक अवसरों का सृजन एक अनिवार्य कदम माना गया है। क्योंकि सुसंस्कृत एवं पूर्ण समाज की रचना शिक्षित महिलाओं से ही संभव है। हम देखते हैं कि वैदिक काल में स्त्री शिक्षा चरमोत्कर्ष पर थी। उन दिनों स्त्रियाँ पुरुषों के समान ही वेदों की रचना व अध्ययन में अपना कीर्तिमान स्थापित किए हुए थीं। साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि देश में वैदिक धर्म विकास के इस काल में महिला शिक्षा की दिशा में कोई प्रगति नहीं हो पायी। मुगल काल में पर्दा प्रथा के बढ़ते प्रभाव एवं सामाजिक दुरुहता के कारण अधिकांश महिलाओं को शिक्षा से वंचित होना पड़ा। फिर भी सल्तनतकाल में एकाध विदुषी महिला के रूप में रजिया का नाम आता है, तो मुगल काल में स्त्री शिक्षा एक विशेष रूप में नजर आयी। अकबर ने लड़कियों की शिक्षा पर उचित ध्यान दिया, फिर भी उन दिनों शिक्षा की व्यवस्था मात्र शाही घरानों एवं साधन-सम्पन्न कुलीन परिवारों तक ही सीमित रह गयी। मुगलों के पश्चात कम्पनी का शासन शुरू हुआ। अंग्रेजों ने स्त्री शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। हालांकि इस काल में स्त्री शिक्षा की दिशा में व्यक्तिगत प्रयास ही उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कुछ धर्म सुधारकों— जैसे— राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन के प्रयास से स्त्री शिक्षा में जागृति आयी। इन्हीं दिनों, ईश्वर



चन्द्र विद्यासागर व महादेव गोविन्द राणाडे जैसे समाज सुधारकों के द्वारा अनेक कन्या विद्यालय स्थापित किए गए। तत्पश्चात अंग्रेजी सरकार द्वारा चार्ल्स वुड एवं हंटर कमीशन की घोषणा में स्त्री शिक्षा के समुचित विकास के लिए मार्ग प्रशस्त किया गया। इस तरह आधुनिक काल में आकर स्त्री शिक्षा में एक नया आयाम स्थापित हुआ। इस भारतीय परंपरा में आज स्त्री पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है तथा प्रत्येक क्षेत्र में उतना ही दखल रखती है, जितना पुरुष। महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु संविधान के 73वें एवं 74वें संशोधन के परिणामस्वरूप ग्रामीण एवं नगरीय पंचायतों में महिलाओं को एक-तिहाई आरक्षण दिए जाने का प्रावधान है। उक्त कानूनों को सख्ती से लागू करना होगा। विशेषकर ग्रामीण विद्यालयों के लिए महिला शिक्षकों की नियुक्ति उच्च प्राथमिकता का क्षेत्र बनाया जाना चाहिए। क्योंकि यह महिला सशक्तिकरण का ही तो एक उपक्रम है। वर्तमान समय में बिहार में किए जा रहे सार्थक प्रयास का परिणाम है कि पंचायत प्रारंभिक शिक्षक, नगर प्रारंभिक शिक्षक तथा अनौपचारिक अथवा पूर्व बालपन शिक्षण केन्द्रों में महिलाओं की अच्छी भागीदारी देखी जा रही है। युवा-वयस्क महिलाओं

को शिक्षा का अवसर एवं अधिकार प्रदान करना अपने आप में एक लक्ष्य है, जो सशक्तिकरण की ओर संकेत करता है। वस्तुतः महिलाएँ जब तक अपनी क्षमता, शक्ति व आत्मविश्वास को जागृत नहीं करेंगी, तब तक बाह्य कारक उन्हें सशक्त नहीं बना सकते। क्योंकि सशक्तिकरण बाहर से थोपा नहीं जा सकता, वह तो स्वयं के भीतर से उत्पन्न होना चाहिए। यह तभी संभव है जब वह शिक्षित होगी, क्योंकि शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का रास्ता खोलती है। महिला शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए क्रांति ज्योति सावित्री बाई फूले को प्रेरणापूज मानकर कार्य करना होगा। तभी अपेक्षित सफलता संभव हो सकता है और महिला सशक्तिकरण का सपना सच हो सकता है।



प्रिती कुमारी,
भाई- धीरज कुमार,
वरिष्ठ लेखाकार



घड़ी ना हार मानी है

विरह-संताप से कैसा ज्वलन, अपनी पिहानी है
न समझे गैर इहमन की व्यथा, जाके मिटानी है

मिले सुन्दर मकाँ उसको वहाँ, तब से महापूजा
मुझे किस हाल में छोड़ा यहाँ, कहती सुहानी है

बनी दूरी अगर जो चंद्रिका से, चंद्रमा फीका
अकेला ही उधर बिछुड़ा, हुई कैसी रवानी है

नहीं उस राह में जोड़ी, हुई जगदीश से लीला
यहाँ तो मौत का तांडव, डराता और शानी है

बताता आ मुझे कोई, मकाँ तक राह जाने को
जुदाई ठीक ना होती, व्यथा रब को सुनानी है

मिला दें फिर प्रभो उससे, सहारा पा सकूँ अपना
यहाँ डर ना लगे मन में, निडर दुनिया बसानी है

अधूरा ही रहा सपना, परीक्षा चल रही उसकी
समझ 'पूर्णन्दु' की अपनी, घड़ी ना हार मानी है



पूर्णन्दु कुमार झा, अतिथि कवि,
द्वारा अविनाश कुमार ठाकुर,
सहायक लेखा अधिकारी

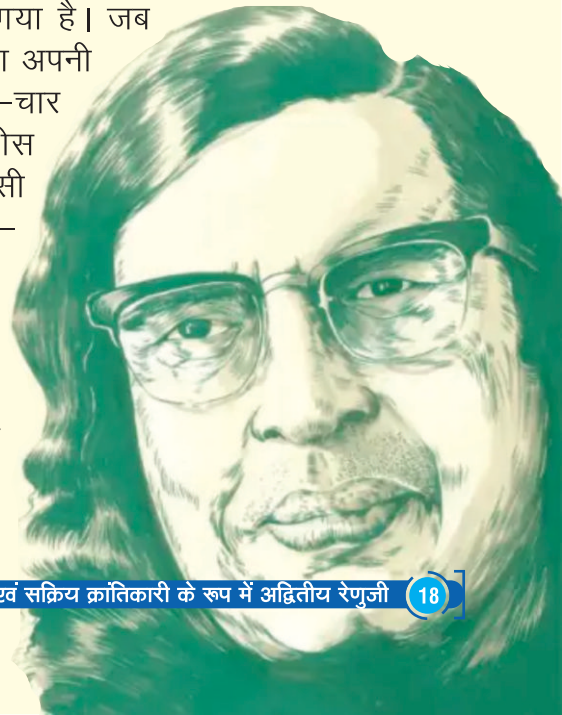
कथाशिल्पी, देशभक्त एवं सक्रिय क्रांतिकारी के रूप में अद्वितीय रेणुजी

अमर कथाशिल्पी रेणुजी की 4 मार्च, 2024 को 103वीं जयंती और अगले माह पुण्यतिथि है। रेणुजी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। एक उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार, कवि, सक्रिय स्वतन्त्रता सेनानी और 1975 में थोपी आपातकाल जिसका मुखर विरोध करने के साथ-साथ जय प्रकाश नारायण जी के सहयोगी के रूप में जाने जाते हैं और आपातकाल के कालखंड में असीम यातनाएँ सहे। रेणुजी 1942 के स्वतन्त्रता आंदोलन की लड़ाई में सक्रिय सेनानी की भूमिका में रहे। उस समय रेणु जी महज 21 वर्ष के रहे होंगे और एक ग्रामीण पृष्ठभूमि का नौजवान वैसे समय में जब आवागमन, संचार माध्यम जैसे बुनियादी सुविधा का सर्वथा अभाव रहा होगा, तब भी उस 21 वर्षीय नौजवान के लिए देश ही सर्वोपरि था। रेणुजी की प्रारम्भिक शिक्षा नेपाल के विराटनगर में हुई और कोईराला परिवार से नजदीक से जुड़ाव रहा। लेकिन 1950 में नेपाली जनता के लिए जब कठिन समय आया तो नेपाली क्रांतिकारी आंदोलन में भूमिगत रहकर सक्रिय क्रांतिकारी की भूमिका में रहे और नेपाल में नमक के कर्ज को अदा करने में भी पीछे नहीं रहे। आज का 21 वर्ष का शहरी नौजवान पढ़-लिखकर कम से कम एक छोटी सी सरकारी नौकरी पाने के लिए सब कुछ खपा देता है और इसमें कुछ लोग ही सफल हो पाते हैं, ज्यादातर को निराशा ही हाथ लगती है। वहीं आज का ग्रामीण परिवेश का 21 वर्ष का नौजवान गाँव में खेती-बाड़ी में हाथ बंटाता है। लेकिन खेती भी अब मुनाफे का सौदा नहीं रहा और इसलिए थक हार कर बाहर कमाने सोनीपत, पानीपत, लुधियाना इत्यादि जगह रोटी की जुगाड़ में चला जाता है। लेकिन 1942 में 21 वर्षीय रेणु के लिए देश ही प्रथम था।

नेपाली क्रांति के पश्चात् रेणुजी गंभीर रूप से रोगग्रस्त हो गये। बिछावन पर आ गए। बीमारी के कारण कदम तो रुक गये लेकिन रेणुजी का मन मस्तिष्क तेजी से चलता रहा और तब 1954 में कालजयी रचना "मैला आँचल" प्रकाशित हुई। उस एक प्रारम्भिक पूर्ण रचना ने रेणुजी को प्रेमचंद जी और निराला जी के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया। उसके बाद तो रेणुजी अनेकों मोतियों के कड़ियों को कलमबद्ध करते चले गये, जिसमें मुख्य

रूप से परती परिकथा, कितने चौराहे, ऋणजल-धनजल, दीर्घतपा, पलटू बाबू रोड, तुमरी, जुलूस, आदिमरात्रि की महक, अग्निखोर, एक श्रावणी दोपहरी की धूप, अच्छे आदमी, श्रुत-अश्रुत पूर्व, समय की शिला पर, वन तुलसी की गंध इत्यादि। कहानी संग्रह में से उनकी प्रसिद्ध कहानी "मारे गये गुलफाम" पर राजकपूर-वहीदा रहमान अभिनीत "तीसरी कसम" एवं एक अन्य चर्चित कहानी पंचलाईट पर "पंचलैट" फिल्म बनी। रेणुजी का व्यक्तित्व एक अनसुलझी पहेली और कल्पना से परे की बात लगती है कि उस समय रेणुजी के दिमाग में आखिर क्या-क्या चलता था। रेणुजी द्वारा कलमबद्ध उपन्यास, कहानी संग्रह एवं समय-समय पर अन्य लेखकों की राय तथा आलेख इत्यादि को पढ़कर उन्हें जितना समझने का प्रयास करता हूँ, उतना ही वे झराते (उलझते) चले जाते हैं।

रेणुजी के कहानी संग्रह में रिश्तों को लेकर अपना-पराया भावदर्शित करने वाला उनकी प्रिय कहानियों में से रसप्रिया भी है। पंचकौड़ी मिरदंगिया को गांव का बच्चा, जवान, बूढ़े-बुजुर्ग निर्लज्ज, दसदुआरी, अधपगला कहकर चिढ़ाता और ताना मारता है, फिर भी मृदंग बजाता विधापद (पदावली) द्वार-द्वार गाकर पेट पालता है। यहां पर रेणुजी के द्वारा उस समय के ग्रामीण सामाजिक ताने-बाने में भावनात्मक रिश्ता, सामाजिकता, समरसता एवं आपसी लगाव को बखूबी उकेरा गया है। जब पंचकौड़ी मिरदंगिया अपनी वर्षों की कमाई-चार दसटकिया (चालीस रुपये) को बिना किसी संकोच एवं मोह-माया के बीमारग्रस्त चरवाहा मोहन को देते हुए कहता है—
मोहन बेटा!
फारबिसगंज के डागदरबाबू को देकर बढ़िया दवा



लिखा लेना और अपनत्व से हिदायत भी देता है कि खट्टा—मीठा से परहेज करना, गरम पानी जरूर पीना, जबकि चरवाहा मोहन से उसका कोई लहू का रिश्ता नहीं है। चूँकि चरवाहा मोहन रमपतिया का बेटा है; वही रमपतिया, जोधन गुरु जी की बेटा जिसके साथ गुरुजी एक समय कभी चुमौना की बात चलाई थी लेकिन यह बात सुनकर रात में ही पंचकौड़ी मिरदंगिया बिना बताए भाग गया था। यह उस समय की बात है जब पंचकौड़ी मिरदंगिया मूलगैनी सीखने गुरु जी के पास ही रहता था। रमपतिया को प्यार में धोखा देने की बात जीवन भर पंचकौड़ी मिरदंगिया को कचौटता रहता था और शायद इसीलिए प्रायश्चित्त करने के लिए उसने अपनी सारी जमा पूंजी चरवाहा मोहन को इलाज के लिए दे दिया। आज 70—80 वर्ष बाद गांव में भी सब कुछ बदल गया है। लोग साक्षर और समझदार हो गए हैं, लेकिन दिमाग में पहले “मैं” जैसा अपना स्वार्थ रहता है और संभवतः इसलिए गांव में परिवारों के बीच का भावनात्मक लगाव का अहम डोर टूट कर बिखर गया है। जहां भाई—भाई एवं भाई—भतीजा के बीच खून का रिश्ता होने के बावजूद छोटी—छोटी बातों को लेकर भी सिर फुटव्वल होते रहता है। मूँछ की लड़ाई शुरू हो जाती है। अब पंचकौड़ी मिरदंगिया जैसा दिलेर चिराग लेकर भी ढूंढने से गांव में नहीं मिलेगा।

रेणुजी की कलम की ताकत एवं शब्दों का चयन का ही कमाल है, जब पढ़ते समय संपूर्ण दृश्य मन—मस्तिष्क पर बाइस्कोप जैसा दृश्य पैदा कर चलने लगता है। ऋणजल—धनजल में “पंछी की लाश” प्रसंग में हृदय विदारक घटना का जिक्र किया गया है। जब शादी के बाद पहला सन—भादो (सावन—भादो) के समय नई नवेली बहुरिया नैहर जाती है। इस बार भी काफी विलंब से ही सही बहुरिया को लिवाने भाई आया है। ससुराल में सास—ससुर का आधे मन से अनुमति मिल गयी। दुखिया दुल्हन हंसी—खुशी भाई के साथ मायके की ओर विदा होती है। रास्ते में कोसी नदी को पार कर उस पार जाना है, लेकिन घाट पर कहीं कोई नाव नहीं है। जुगाड़ व्यवस्था से केला डमकोचा (केला पेड़ का मध्य भाग) को आपस में घास—फूस की डोर से बांधकर भाई—बहन उमड़ी और विकराल कोसी की धारा पार करने लगे, लेकिन बीच नदी में तेज धार की घूमती हुई चकरी में डोर टूट गई। केला का डमकोचा अलग—अलग

हो गया। भाई—बहन का एक दूसरे से हाथ छूट गया। भाई ने बहिन को बचाने की पुरजोर कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका। नवविवाहिता बहन जिसकी नई जिंदगी अभी—अभी शुरू हुई थी, एक क्षण में सब कुछ समाप्त हो गया। लेकिन डूबती बहिन ने दिल को झकझोर देने वाली हृदय विदारक अंतिम संदेश मां के नाम, बाप के नाम दिया कि किसी बेटा को सन—भादो के समय नैहर बुलाने में कभी कोई देरी नहीं करे। और, देरी हो जाए तो जामुन का पेड़ कटवाकर नाव बनवाएं, और तभी लड़की को लीवाने भेजें। रेणुजी की अपनी प्रभावशाली रचनाशीलता ही है कि घटनाक्रम जीवंत हो उठता है।

रेणुजी के असमय चले जाने से देश एक कर्मयोगी साहित्यकार एवं आंचलिक कथाकार को खो दिया। यदि वे दीर्घायु होते तो पता नहीं और कितनी कड़ियों को कलमबद्ध कर चुके होते, जिससे साहित्य जगत वंचित रह गया। यह महज एक संयोग है कि रेणुजी एवं प्रेमचंदजी, जिनकी लेखनी में गांव—देहात की जीवनी, आंसू, दुख, अभाव के साथ जिंदगी चलती और धड़कती थी, दोनों 56 वर्ष की अल्पायु में ही दुनिया को अलविदा कह गए।

जिन्होंने आदरणीय फणीश्वरनाथ रेणु को पढ़ा है, उन्हें जीया भी है। उनके हृदय में लेखनी का वह निर्भीक क्रांतिकारी सिपाही चेथरिया पीर (पुराने पूर्णिया जिले के एक गाँव का पीर, जिसके बारे में प्रसिद्धि थी कि वह जामुन के पेड़ पर निवास करता था तथा पुराने—जर्जर कपड़े का चढ़ावा लेकर लोगों का कल्याण करता था) में भी आस्था रखने वाला सच्चा कलमकार आज भी जीवित है।



देवेन्द्र प्रसाद,

सहायक लेखा अधिकारी

खेल और स्वास्थ्य

वर्तमान परिवेश व जीवनशैली में आज मनुष्य जब नाना प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो रहा है, ऐसे समय में खेलों की महत्ता स्वयमेव स्पष्ट हो जाती है। खेलों द्वारा न केवल हमारी दिनचर्या नियमित रहती है, बल्कि ये उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा, हृदय रोग जैसी बीमारियों की संभावनाओं को भी न्यून करते हैं। इसके अलावा खेल कूद से स्वयं को चुस्त-दुरुस्त रखने में भी मदद मिलती है, जिससे हम अपने दायित्वों का निर्वहन सक्रियतापूर्वक कर पाते हैं। आजकल की रोजमर्रा जीवन शैली में मैदान में खेले जाने वाले खेलों से बच्चे अत्यंत दूर हो चुके हैं, वजह है मोबाइल।

एक अच्छा जीवन जीने हेतु अच्छे स्वास्थ्य का होना बहुत जरूरी है। जिस प्रकार शरीर को ऊर्जावान और स्वस्थ रखने के लिये व्यायाम की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार खेलकूद भी स्वस्थ जीवन हेतु अत्यधिक महत्वपूर्ण है। खेल बच्चों और युवाओं के मानसिक तथा शारीरिक विकास दोनों के लिये अति आवश्यक है। नई पीढ़ी को किताबी ज्ञान के साथ-साथ खेलों में भी रुचि बढ़ाने की जरूरत है। खासकर बच्चों को मोबाइल जगत से दूर करना आवश्यक है। यह एक प्रकार की लत है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाधक सिद्ध हो रही है।

परंपरागत रूप से भारत के मध्यम वर्ग की धारणा रोजगार परकता के मायनों में खेलों के प्रति नकारात्मक रही है। खेलकूद को मनुष्य के बौद्धिक विकास व रोजगार प्राप्ति में बाधक मानते हुए ऐसा कहा जाता था कि “पढ़ोगे—लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे—कूदोगे तो होगे खराब।” लेकिन बदलते समय के साथ यह साबित हो गया कि खेल मनुष्य के विकास में बाधक नहीं अपितु सहायक हैं। बगैर शैक्षणिक उपलब्धि के भी सचिन तेंदुलकर द्वारा अर्जित यश, सम्मान, धन, लोकप्रियता आदि इस बात के उदाहरण हैं। सचिन तेंदुलकर द्वारा देश का सर्वोच्च सम्मान ‘भारत रत्न’ प्राप्त करना, वर्तमान परिदृश्य में खेलों की महत्ता को दर्शाता है। आज सचिन ही नहीं वरन् पी.वी. सिंधु, मनु भाकर, नीरज चोपड़ा, साइना नेहवाल, मैरी कॉम व महेंद्र सिंह धोनी, रोहित शर्मा जैसे नामों ने सफलता व समृद्धि के आयाम गढ़े हैं, उसके समक्ष संस्थागत शिक्षा का प्रश्न गौण हो जाता है। परंतु यह जरूरी नहीं है कि रोजगार प्राप्ति की सोच के साथ ही मैदान पर उतरना चाहिए। “स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है” ऐसी अवधारणा के साथ बच्चों तथा युवाओं को मैदान में उतरना चाहिए, ताकि उनके अंदर एक स्वस्थ काया का विकास हो सके। खेलों से प्रतिस्पर्धा का भाव उत्पन्न होता



है, जिससे जीवन में सफल होने की क्षमता बढ़ जाती है।

सरकार ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों को अनेक प्रकार के पुरस्कारों से सम्मानित करती है। अर्जुन एवं द्रोणाचार्य जैसे पुरस्कार इसी श्रेणी के खेल पुरस्कार हैं जो भारत में खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु सरकार द्वारा खिलाड़ियों और गुरुओं को प्रदान किये जाते हैं। हमारे देश की कई महिलाओं यथा— वीनेश फोगट, मैरी कॉम, सायना नेहवाल एवं पी.वी. सिंधु ने दुनिया भर में खेल में काफी नाम कमाया है और देश को गौरवान्वित किया है। खेलों को भारतीय संस्कृति एवं एकता का प्रतीक भी माना जाता है। खेल हमारी प्रगति को सुनिश्चित कर जीवन में सफलता प्रदान करते हैं।

आज सरकारी व निजी दोनों क्षेत्रों में खिलाड़ियों के लिये नौकरियाँ पाने के कई अवसर हैं। रेलवे, एअर इंडिया, भारत पेट्रोलियम, ओ.एन. जी.सी., आई.ओ.सी. जैसी सरकारी संस्थाओं के साथ-साथ टाटा अकादमी, जिंदल ग्रुप जैसे निजी समूह भी खेलों व खिलाड़ियों के विकास व प्रोत्साहन हेतु प्रतिबद्ध हैं। इसके अलावा आई.पी. एल., आई.बी.एल., एच.सी.एल., जैसे लीगों तथा स्थानीय क्लबों के स्तर पर भारी निवेश ने खिलाड़ियों के लिए विकल्प को बढ़ाने के

साथ-साथ उन्हें बेहतर मंच व अवसर उपलब्ध कराया है। इसे देखते हुए अब कहा जा सकता है कि "मन से खेलो—कूदो तो बनोगे नवाब।"

इससे यह स्पष्ट होता है कि खेल से न सिर्फ स्वास्थ्य बल्कि रोजगार एवं यश तथा सम्मान भी प्राप्त होता है। खेल से नेतृत्व क्षमता का भी विकास होता है। खेल हमें एकता के सूत्र में बांधता है। खेल द्वारा राजनैतिक लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है। कई देशों में यह देखने में आया है कि खेलों का अप्रत्यक्ष रूप से संबंध देश के विकास में भी होता है। वर्तमान समय में लोगों के खेलों के प्रति नजरिये में काफी बदलाव आया है। खेल हमें विभिन्न प्रकार से शिक्षित भी करते हैं। इससे मानवीय मूल्यों का विकास होता है। साथ ही खेलों द्वारा सामूहिक चेतना का भी विकास होता है, क्योंकि खेल की मूल भावना यही होती है कि अकेले नहीं बल्कि समूह में खेलना तथा खेल द्वारा नेतृत्व करने की कला का भी विकास होता है। खेल से रचनात्मकता को भी बढ़ावा मिलता है। आजकल खेलों में कई नई प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे खेलों में सटीकता और उसके अनुसार नीति-निर्माण में भी सहायता मिल रही है।

खेलों के संदर्भ में अगर नकारात्मक पहलू की बात की जाए तो वह यह है कि मनोरंजन के



नए साधनों और कैरियर की भाग-दौड़ ने खेल के मैदानों में होने वाली भाग-दौड़ को कम कर दिया है। बच्चे हों या युवा, लगातार मोबाइल पर गेम या वीडियो गेम खेलना आज लोगों की आदत बनती जा रही है। इसके परिणामस्वरूप युवा और छात्र आबादी का एक बड़ा हिस्सा खेल के मैदानों से गायब होता जा रहा है।

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि जीवन में खेलों का महत्त्व निर्विवाद है। ये न केवल जीवन में गति व लय का संचार करते हैं, वरन् हमें जीवन का महत्त्वपूर्ण पाठ भी पढ़ाते हैं। बच्चों में एकता का भाव खेल के माध्यम से उत्पन्न होता है जो आगे चलकर राष्ट्रीयता के भाव में बदल जाता है।

खेल न केवल हमें स्वस्थ रहने में योगदान देकर सक्षम बनाते हैं, वरन् वर्तमान युग की संकीर्णतावादी सोच के विरुद्ध हमें निष्पक्ष, सहिष्णु तथा विनम्र बनाकर एक बेहतर मानव संसाधन के रूप में बदलते हैं। खेलों की महत्ता को दुनिया के प्रत्येक समाज व सभ्यता में स्वीकृति मिली है। रामायण, महाभारत से लेकर ग्रीक-रोमन दंत-कथाओं में होने वाले खेलों का जिक्र इस बात का प्रमाण है। पुनः, ओलंपिक यह स्पष्ट करती है कि

खेलों को सांस्थानिक महत्त्व मिलता रहा है।

इंटरनेट और मोबाइल का संगम बच्चों को अत्यधिक प्रभावित कर रहा है। इससे स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक गुणवत्ता में गिरावट देखा जा रहा है। इस गिरावट को दूर करने के लिए बच्चों को मैदान की तरफ रुख करवाना एक मात्र उपाय है। एक देश को विकसित होने में स्वास्थ्य अहम भूमिका निभाती है। विंस्टन चर्चिल ने सही ही कहा है "स्वस्थ नागरिक किसी भी देश की सबसे बड़ी संपत्ति है।"



सोनी कुमारी,
पति- सन्नी कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित
कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ





विद्यार्थी जीवन



हमारी संस्कृति में जीवन को चार चरणों में बांटा गया है। जो है विद्यार्थी जीवन, गृहस्थ जीवन, वानप्रस्थ जीवन एवं सन्यासी जीवन। विद्यार्थी जीवन में एक ऐसा चरण आता है जब हम आगे की पढ़ाई करने के लिए अपने घर—शहर से दूर जाकर रहते हैं। कोई हॉस्टल में रहता है, तो कोई किराये के कमरे में रहता है। जीवन का यह भाग कष्टकारी भी है और जीवन का सबसे यादगार भी। अगर यहाँ मेहनत करें तो आगे जाकर जीवन सुखमय हो सकता है, अन्यथा जीवन में संघर्ष बढ़ जाता है।

आमतौर पर विद्यार्थी आगे की पढ़ाई के लिए छोटे शहरों या गाँव से बड़े शहरों में जाते हैं, ताकि वे बेहतर शिक्षा प्राप्त कर सकें। यह ऐसा पल है, जब बच्चे अपने माता—पिता से पहली बार दूर होते हैं। उनको अपना ख्याल खुद रखना पड़ता है। थोड़ी आजादी भी मिलती है, परंतु यह उस विद्यार्थी के उपर है कि वो कैसे इस आजादी का इस्तेमाल करता है। कई नशे की लत में पड़ जाते हैं और अपना भविष्य बर्बाद कर लेते हैं। तो कोई अपने ऊपर नियंत्रण रखता है और कामयाबी प्राप्त करता है।

जब आप विद्यार्थी जीवन में शिक्षा प्राप्त करने बाहर निकलते हैं तो बेशक आप परिवार से दूर रहते हैं, उनकी याद आती है। इधर आपको एक नया परिवार मिल जाता है, जिसे हम दोस्त कहते हैं। जो आपके साथ रहता है, खाता है, घूमता है और आपका साथ देता है। कई दोस्त अच्छे होते हैं तो कई खराब भी होते हैं। हमें मित्र का चयन सोच समझ कर करना चाहिए, क्योंकि हमारे भविष्य पर इनका बहुत गहरा प्रभाव होता है। अगर आप एक ऐसे व्यक्ति को मित्र बनाते हैं जो जिज्ञासु है तथा अपने भविष्य को लेकर गंभीर है, तो कहीं न कहीं आप भी उसके जैसे बन जाएंगे। लेकिन वहीं, यदि आपने ऐसे मित्र बनाए जो नशे, जुआ आदि की लत में हैं, तो कहीं न कहीं आपको भी इन चीजों की लत लगवा सकता है। कॉलेज में कई ऐसे मित्र बनेंगे जो समय के साथ आपके जीवन से गायब हो जाएंगे, लेकिन ऐसी यादें दे जाएंगे जो जीवन भर आपके साथ रहेंगी। जब आप अकेले बैठे होंगे तब भी उनकी बातें आपके चेहरे पर मुस्कान ला देंगी। रात के दो

बजे बहाना बनाकर बाहर खाने जाना हो या परीक्षा की एक रात पहले सब के साथ बैठ के पढ़ना हो, ये सब याद आएंगे।

हाँ, इन चीजों के बावजूद भी कष्ट तो होगा। माँ के हाथ की रोटी जो न मिलेगी यहाँ। घर पर माँ—बाप होते हैं, जो आपके सारे काम देख लेते हैं, जैसे आपके स्वास्थ्य का ध्यान रखना, समय पर खाने को याद दिलाना तथा सुबह डांटकर जल्दी उठाना। बस ये समझ लो कि वो माँ की डांट की जगह अलार्म क्लॉक ले लेता है। उस मखमली बिस्तर की जगह एक फोल्डिंग ने ले ली। लेकिन वो विद्यार्थी जीवन ही क्या, जिसमें कष्ट ना हो।

अंततः मैं यह कहना चाहूँगा कि विद्यार्थी जीवन, का एक बहुत खूबसूरत लम्हा है। इसे खुल कर जीना चाहिए। जज्बातों से नहीं, दिमाग से। कुछ अनुचित नहीं करना चाहिए, जिससे अपना भविष्य संकट में आ जाये। याद रखना चाहिए कि हम घर से दूर क्यों हैं और हमसे किनकी उम्मीदें जुड़ी हैं। जीवन में कुछ न कुछ करना है, जिनसे घरवालों को हमपर नाज हो और कभी भी अपनी कोई बात अपने माता—पिता से नहीं छुपानी चाहिए। उनसे बड़ा और उनसे पहले आपका मित्र कोई नहीं है।



आयुष राज,

पिता : कृष्ण किशोर,
वरिष्ठ लेखाकार



ऑडिट रन 2023 में भाग लेते उच्च अधिकारीगण



ये दुनिया मोह-माया का बंधन है

एक बच्चा जैसे ही होश संभालता है, उस पर पढ़ाई का बोझ आ जाता है और वो तब तक पीछा नहीं छोड़ता जब तक कि वो अपने पैरों पे पूर्णतः खड़ा नहीं हो जाता। इस दुनिया में आया और रेस में शामिल हो गया, उसकी इछाएँ, आकांक्षाएँ क्या हैं, वो सोच नहीं सकता। इन सब चीजों को त्याग कर भविष्य सँवारने के लिए आगे बढ़ता है। ऐसी ही कहानी मेरे करीबी मित्र की है।

उसे पढ़ाई से बहुत लगाव था पर कमबख्त पढ़ने नहीं जाना चाहता था, उसे लोगों से मिलना-जुलना, खेलना-कूदना ही पसंद था। वो दिन में खेलता और जैसे ही अकेले होता पढ़ाई को स्मरण करता। एक तरफ अपनी पसंदीदा काम को तो दूसरी तरफ शिक्षा को भी नहीं छोड़ना चाहता था।

उसे पता था, ये शिक्षा उसे भविष्य में आगे ले जाएगी। शिक्षा एक ऐसी कला है जो मिट्टी को भी सोना बना दे। समय गुजरता गया, लोग मिलते गए, बिछड़ते गए। अब वो बड़ा हो चला था, एक तरफ उसे भविष्य की चिंता सताए जा रही थी, तो दूसरी तरफ अपना घर, जिसे वो छोड़ के नहीं जाना चाहता था। वह अब विद्यालयी शिक्षा पूरा कर चुका था और कॉम्पिटिशन की दुनिया में अपना पाँव रखा, परंतु यही वो कारण था कि वो कॉम्पिटिशन की तैयारी करने के लिए बाहर नहीं गया।

उसे कॉम्पिटिशन की दुनिया में शीघ्र सफलता प्राप्त करना था, पर उसके मन में ये भी डर था कि अगर चयन हो गया तो उसे इस माहौल को छोड़ के जाना होगा। यह प्रायः देखा जा रहा है कि आज के बच्चों में होम-सिकनेस की भावना ज्यादा है, जिससे वो निकल नहीं पा रहे हैं। यह भी एक कारण है, जिसके चलते वो अपने भविष्य

से समझौता कर ले रहे हैं। एक मध्यम वर्गीय परिवार को बहुत कुछ सोच के चलना पड़ता है या उसे भविष्य को ध्यान रखना था जिस पर बहुत कुछ निर्भर करता था। उसे खेल से बहुत लगाव था, पर पढ़ाई का भी जुनून था। दिन भर खेलता, तो रातों को पढ़ता, ऐसी ही उसकी दिनचर्या थी, वो इन दोनों में किसी एक के लिए समझौता नहीं कर सकता था, उसे दोनों की उतनी ही जरूरत थी। उन दिनों खेल के बहुत अच्छे प्लेटफॉर्म नहीं होने के कारण खेल में बहुत कुछ हासिल नहीं हो सका, इसलिए शिक्षा के तरफ ही रुझान बढ़ाना एक मात्र लक्ष्य था।

उसने दिन रात एक कर पढ़ाई की, ताकि जल्द ही सफलता मिल सके, क्योंकि उसे शौक था कि मैं कम से कम उम्र में नौकरी कर सकूँ। उसने अपनी पहली परीक्षा दी जो कि रेलवे का था। वह करीब डेढ़ माह तक विभिन्न चरणों में विभिन्न शहरों में सम्पन्न हुआ। जिस तरह की स्थिति उसने देखा, उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि जिस परीक्षा में वह उपस्थित हुआ है उसमें उसका चयन होगा अथवा नहीं, क्योंकि उन दिनों परीक्षा इतने ज्यादा चरणों में होते थे कि ये भरोसा रखना कि मेरा चयन



होगा या नहीं, ये अंदाजा लगा पाना बड़ा ही कठिन कार्य था।

कई महीनों के बाद जब परिणाम आया तो परिणाम देखने के लिए बड़ा उत्सुक था। वो समय आज के समय से बड़ा अलग था, आज के युग में सभी के पास स्मार्टफोन है, जिसके जरिए लोग घर बैठे तुरंत परिणाम देख लेते हैं, परंतु उन दिनों परिणाम देखने के लिए बड़ा संघर्ष हुआ करता था। घर से बहुत दूर शहर में साइबर कैफे हुआ करता था। जब भी कोई रिजल्ट आया तो विद्यार्थियों की भीड़ उमड़ जाती, वहीं घंटों इंतजार के बाद परिणाम देखने को मिलता था। जब रिजल्ट देखने की बारी आयी तो वह क्रमांक संख्या साइबर कैफे वाले को बता के आँखें बंद करके भगवान को याद कर रहा था कि तभी कैफे वाले ने बताया— तुम्हारा रिजल्ट आ गया। वो लड़का खुशी-खुशी अपने घर आया, उस रात बड़े इत्मीनान से सोया। उसने अपने सफर को और आगे ले जाने का प्रयास किया और पहले से ज्यादा मेहनत करना शुरू किया, बिना ये सोचे कि उसे नौकरी तो मिल गई है। रिजल्ट के बाद मेडिकल परीक्षा अभी होना था, परंतु उसे टाइम से मेडिकल का लेटर नहीं मिला और जब मिला तो उसका डेट निकल चुका था, उसे बहुत अफसोस हुआ। पर वो पुनः पोस्ट ऑफिस पहुँचा और वहाँ से उस लेटर पर प्राप्ति-तिथि अंकित करा कर पुनः उस पते पे पहुँचा, जहाँ से वह पत्र आया था, वहाँ उसे अच्छे अधिकारी मिले और आग्रह करने पर उसका मेडिकल टेस्ट सम्पन्न हुआ, जिसके पश्चात वो बेहद खुशी-खुशी अपने घर लौट आया। अभी कुछ दिन ही बीते थे कि न्यूज आया कि उस परीक्षा पर केस हो गया। वो काफी दुखित हुआ, क्योंकि वो जो आशा लगाया था कि नौकरी हो जाएगा, वहाँ ये मनहूस न्यूज आया, उसके बाद वो मामला ठंडे बस्ते में चला गया और जब तक सब फाइनल हुआ, बहुत देर हो चुका था।

एक छोटे शहर का लड़का जो कॉम्पिटिशन की दुनिया से बिलकुल अनभिज्ञ था, पर उसमें जज्बा था आगे बढ़ने का और खुद पर भरोसा था। इसी बीच एक और परीक्षा हुई, जिसमें पुनः सफल हो गया, इस बार उसका जॉइनिंग लेटर भी आ

गया। एक आज का डिजिटल युग है, जिसमें अनेकों सुविधाएँ उपलब्ध हैं, आज के युग में फॉर्म भरने से लेकर जॉइनिंग लेटर तक बहुत आसानी से इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त हो जाता है और वो एक युग था जिसमें लोगों को एक आशा लगी रहती थी इन सब की। मानों एक पर्दा सा है जहाँ कुछ भी स्पष्ट नहीं था। ऐसे में डाकिया की भूमिका बहुत ही अहम होती थी। यदि किसी की गलती के कारण या भूल से जॉइनिंग लेटर या प्रवेश-पत्र ससमय संबंधित व्यक्ति को नहीं मिला तो बड़ी मुश्किल हो जाती थी। यहाँ तक कि उसका भविष्य भी मुश्किल में पड़ जाता था। परंतु किस्मत का खेल देखिए। इस बार तो जॉइनिंग लेटर आने के बाद भी बेचारा जॉइनिंग नहीं कर सका, इस बार शारीरिक माप दंड में अयोग्य करार दिया गया।

लोगों ने परीक्षा के किसी न किसी चरण में तो अयोग्य घोषित होने की घटना सुनी होगी, परंतु जॉइनिंग लेटर आने के बाद भी कोई अयोग्य हो, ऐसा शायद पहली बार सुने होंगे। परंतु, उसके साथ ऐसा ही हुआ। उसने पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. कलाम सर के बारे में बहुत सुना था और वो उनसे बहुत ही प्रभावित था। उसने उनका एक कथन पढ़ा था, जिसमें उनके द्वारा बताया गया था कि “यदि आपको कोई चीज नहीं मिले तो आप परेशान नहीं हों, क्योंकि आपको उससे बेहतर मिलने वाला है।”

कलाम सर ने एक कथन में बताया कि वो पायलट बनना चाहते थे, इसलिए उन्होंने एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की थी, पर उनका वायु सेना के लिए चयन नहीं किया गया। अगर उनका चयन उसमें हो जाता तो वो “मिसाइल मैन ऑफ इंडिया” के नाम से नहीं जाने जाते।

जब वो अपने घर लौटा तो आस-पास के लोग उसका मजाक बना रहे थे और आपस में ठहाके लगा रहे थे कि इस बेचारे की किस्मत में नौकरी नहीं है। पर उसके मन में थोड़ी भी उदासी नहीं थी, क्योंकि उसको खुद पर भरोसा था। उसे पता था कि आखिर किस्मत कब तक साथ नहीं देगी। उसके लिए कलाम सर का वो कथन प्रेरणा स्रोत था। और वो उसी विश्वास पर आगे बढ़ा, उसको पता था कि कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का

काम है कहना।

मेहनत करने वालों की किस्मत एक न एक दिन तो साथ देती ही है। उतार चढ़ाव तो बहुत आया, पर उस लम्हे के बाद उसने कभी मुड़ के नहीं देखा। उसके बाद उसका चयन लगभग सभी मंत्रालय/विभागों में होने लगा। जो लोग उस पे हँसते थे, वो उसके मुरीद हो गए। और आखिरकार एक दिन एक साथ दो-दो जॉइनिंग लेटर आया। इस बार वो फिर बहुत खुश था कि अब भविष्य अच्छा हो जाएगा। एक तरफ जॉइनिंग लेटर आने की खुशी, तो दूसरी तरफ उसे अपने घर को छोड़ के जाने का दुख था। पर क्या करें, आखिर भविष्य को ध्यान में रखते हुए उसे तो जाना ही था। और अंततः वह अपने जॉइनिंग के लिए निकल पड़ा। उस शहर पहुँचा, जहाँ उसे जॉइनिंग करनी थी। फिर वह अपने ज्वाइनिंग की खाना पूर्ति में लग गया। उसका मन वहाँ लगा ही नहीं। लोग तो काफी अच्छे मिले, पर जो माहौल वो अपने गृह शहर में छोड़ आया था, उसे वो अक्सर याद करता था, पर कमबख्त नौकरी के वजह से विवश था कि अगर घोड़ा घास से दोस्ती कर ले तो खाएगा क्या?

उसका सफर वहीं खत्म नहीं हुआ। उसने फिर परीक्षा की तैयारी शुरू की, ताकि अपने घर के समीप पहुँच पाए। छोटे शहर में नौकरी करना बड़ा ही कठिन कार्य होता है, वहाँ दिन भर कार्यालय में काम और रात को पढ़ाई किया करता। उसके अथक प्रयास से चयन घर के समीप वाले राज्य में हो गया। इस बार वो पहले से ज्यादा खुश हुआ कि अब मैं पास आ गया, जहाँ से मैं अक्सर अपने घर जा सकूँगा। इस बार फिर जॉइनिंग लेटर आया, पर उसके कुछ साथी चाहते कि वो चला जाये पर कुछ चाहते कि यहीं रहे, यहाँ भविष्य ज्यादा अच्छा था। ये स्वाभाविक है कि कोई जहाँ रहता है, उसको वहाँ से लगाव हो जाता है और ये भी सत्य है कि जो चीज छूटता है वो अच्छा लगता है। पुनः वो उस शहर को अलविदा कह कर दूसरे शहर के लिए चल पड़ा। जब नए शहर में आया तो उसे पहले से भी ज्यादा कठिनाई का सामना करना

पड़ा, और ये उस कारण से भी लगता हो कि जो चीज छूटता है वो अच्छा ही लगता है। ये भी सच है कि जो चीज कष्ट ज्यादा देती है, बाद में आनन्द भी उसमें ही ज्यादा आता है। जितना संघर्ष इस नए शहर में हुआ, उतना ही अच्छा इस शहर में लगने लगा। अब आलम ऐसा हो गया कि उसे अपने घर ही जाने की इच्छा नहीं होती, पर उसे तो अपने गृह राज्य जाना था। और अंततः उसकी कोशिश कामयाब हुई और वो अपने गृह राज्य पहुँच गया। ये किस्सा सही हो गया कि जहां चाह वहाँ राह।

जब वह इतने वर्षों के बाद लौटा तो जिस खुशी की तलाश में था शायद उसे नहीं मिली। जिस माहौल को छोड़ के गया था, वो बिल्कुल बदल चुका था। अब उसे अपने घर पहुँच के भी अकेला महसूस हो रहा था, जो उसके बीते कुछ वर्षों से भी फीका था। अब उसको लगता कि काश मैं फिर से वहाँ लौट जाऊँ, पर ऐसा संभव नहीं था। तब जा के उसे महसूस हुआ कि ये दुनिया और कुछ नहीं मोह माया का बंधन है, यहाँ किसी को कुछ हासिल नहीं होने वाला, जहाँ जो पल मिले उसे खुशी से गुजार दीजिए, क्योंकि जो पल बीत गया, वो दोबारा नहीं आने वाला। "ये प्रकृति का नियम है कि जो पल बीत गया वो अच्छा लगता है" और जो आने वाला है उसका भी बड़ा बेसब्री से इंतजार रहता है। पर लोग वर्तमान पल को ही नहीं जी पा रहे हैं, इन दोनों के चक्कर में। इसलिए वर्तमान को जीने की कोशिश करना ही बेहतर है।



दीपक कुमार,

सहायक लेखा अधिकारी

माँ

माँ! मैं बिलख रहा हूँ कब से
ना जाने क्यों तुम रूठ गई
किस अंधेरे में जाकर तुम खो गई
कभी सोचता हूँ तुम कहाँ चली गई
मुझसे ना जाने क्यों मुख मोड़ गई।

ये मेरा सोचना कि तुम फिर आओगी
फिर प्यार से मुझे गले लगाओगी
पता नहीं ये स्वप्न है या सच्चाई
क्या सच में अब तुम लौट कर कभी नहीं आओगी।

जानती हो माँ, अब कोई नहीं सुनता है दर्द मेरा
मैं अब गुमनाम हूँ बस यही है अब फर्ज मेरा
किसे सुनाऊँ किसे बताऊँ
कोई नहीं है जहाँ मैं अब मेरा।

बस एक तेरे बिना संसार कितना सूना लगता है।
तेरी पुकार की आस में बहुत अधूरा लगता है
जीवन की सच्चाई को समझ नहीं पाता हूँ
न जाने फिर भी क्यों तुम्हें याद किये जाता हूँ।

इस रंग बदलती दुनियाँ में बस अकेला हो गया हूँ मैं माँ
तेरी बस याद के सहारे अब जीना सीख गया हूँ मैं माँ
माँ मैं बिलख रहा हूँ कब से
न जाने क्यों तुम रूठ गई तुम मुझसे माँ?



मो० आफताब अंसारी,
सहायक पर्यवेक्षक



मानसून सत्र का आगाज

भारत के ग्रामीण इलाकों में, जहाँ हरियाली की छटा बिखेरती हुई खेतों की सीमाएँ असीमित दिखती हैं, वहीं मानसून का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना होती है। यह कहानी एक छोटे से गाँव, जहाँ मेरा नानी घर है 'अंगारी' की है, जहाँ हर साल मानसून सत्र को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। गाँव के लोग खेती-किसानी पर निर्भर हैं और मानसून उनकी जिंदगी में नवचेतना का संचार करता है। अंगारी के लोग वर्षा ऋतु के आगमन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। ग्रीष्मकाल के तप्त दिन बीत चुके थे और अब सबकी निगाहें आसमान की ओर लगी थीं। हर सुबह सूरज की पहली किरण के साथ ही गाँव के किसान अपने खेतों की ओर चल पड़ते, उम्मीद भरी निगाहों से आकाश को देखते और फिर अपने काम में जुट जाते। अनुभवी किसान, मेरे मामा रामलाल, जो गाँव के सबसे पुराने और अनुभवी किसान थे, अपने बेटे गोपाल को मानसून के महत्व के बारे में समझा रहे थे। "गोपाल बेटा," उन्होंने कहा, "जब पहली बारिश की बूंदें जमीन पर गिरती हैं, तो उसकी खुशबू से हमें नई ऊर्जा मिलती है। यह मौसम सिर्फ फसलों के लिए ही नहीं, हमारे जीवन के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है।"

पहली बूंद— एक दिन, जब सभी लोग अपने-अपने काम में व्यस्त थे, अचानक आसमान में घने बादल छा गए। बिजली की चमक और गर्जन से पूरा गाँव गूँज उठा। बच्चे खुशी से चिल्लाने लगे और महिलाएँ

अपने काम छोड़कर आंगन में आ गईं। बूंद-बूंद बारिश गिरने लगी और देखते ही देखते मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। गाँव के बच्चे और मैं भी इस मौके को छोड़ना नहीं चाहता था। वे अपने पुराने कपड़े पहनकर बारिश में नाचने और गाने लगे। गोपाल भी अपने दोस्तों के साथ बारिश में खेलने चला गया। "बारिश की पहली बूंद भगवान की देन होती है," रामलाल मामा ने मामी से कहा। "यह हमारे लिए नए जीवन की शुरुआत है।"

खेतों की तैयारी— बारिश के बाद, गाँव के किसानों तथा मेरे नानाजी ने अपने-अपने खेतों की ओर रुख किया। फसल बोने का समय आ गया था। हर कोई अपने काम में जुट गया। रामलाल मामा और मैंने भी अपने खेतों में काम करना शुरू कर दिया। वे दोनों अपने खेत की जुताई कर रहे थे और बीज बोने की तैयारी कर रहे थे। मैंने अपने मामा रामलाल से पूछा, "मामा हम इतनी मेहनत क्यों कर रहे हैं?" मामा ने मुस्कराते हुए कहा, "बेटा, यही मेहनत हमारे भविष्य को संवारती है। अगर हम आज मेहनत करेंगे, तो कल हमारे पास खाने के लिए अनाज होगा और हम सुखी रहेंगे।"

प्रकृति की छटा— कुछ हफ्तों के बाद, गाँव के चारों ओर हरियाली फैल गई थी। खेतों में लहलहाती फसलें दिखने लगी थीं। नदी-नाले भी भर चुके थे और उनकी कल-कल ध्वनि से पूरा गाँव गूँज रहा था। गाँव की महिलाएँ नदी के किनारे कपड़े धोने और

पानी भरने जातीं, तो बच्चों के साथ हंसी-खुशी का माहौल बना रहता। सब एक-दूसरे की मदद करते और हँसते-बोलते रहते। मानसून का यह समय गाँव के लिए खुशियों का समय था।

त्योहारों की शुरुआत— जैसे-जैसे समय बीतता गया, गाँव में त्योहारों की शुरुआत हो गई। रक्षाबंधन, तीज और गणेश चतुर्थी जैसे त्योहारों की तैयारियाँ शुरू हो गईं। गाँव के हर घर में रौनक छा गई। हर कोई अपने-अपने तरीके से त्योहारों का आनंद ले रहा था। मेरे मामा की बेटी, सुमन, रक्षाबंधन के त्योहार के लिए बहुत उत्साहित थी। वह मेरे और अपने भाई के लिए रंग-बिरंगी राखियाँ बना रही थी और मिठाइयों की तैयारी में जुटी थी। मामा और मामी तथा नाना भी अपने बच्चों व पोते पोतीयों के साथ खुश थे।

बारिश की बौछारें— एक दिन अचानक फिर से मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। इस बार बारिश इतनी तेज थी कि गाँव के लोग घरों में ही दुबक कर रह गए। खेतों में पानी भर गया और कुछ जगहों पर तो बाढ़ जैसे हालात हो गए। गाँव के लोग चिंतित हो उठे। मामा ने अपने बेटे गोपाल से कहा, “बेटा, बारिश का यही स्वभाव होता है। कभी यह हमारे लिए वरदान बनती है तो कभी चुनौती। हमें हर स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए।”

गाँव की एकता— गाँव के लोग मिलजुल कर इस स्थिति से निपटने की तैयारी करने लगे। सभी ने एक-दूसरे की मदद की और बाढ़ के पानी को निकालने के लिए नालियों की सफाई की। गाँव की एकता और सहयोग से धीरे-धीरे स्थिति सामान्य होने लगी। मामा ने गाँव के लोगों को प्रेरित करते हुए कहा, “हम सबको मिलकर काम करना चाहिए। हमारी एकता ही हमारी ताकत है।” गाँव के लोग मामा की बातों से सहमत हुए और सभी ने मिलकर मेहनत की।

फसल की देखभाल— बारिश के बाद, किसानों ने अपनी फसलों की देखभाल शुरू कर दी। फसलें अच्छी तरह से बढ़ रही थीं और अब उनकी कटाई का समय करीब आ गया था। अन्य किसान और

रामलाल मामा ने भी अपने खेतों में मेहनत की और फसलों की कटाई के लिए तैयारियाँ शुरू कर दीं।

गोपाल ने अपने दादा यानि हमारे नाना से पूछा, “दादा, हमारी मेहनत रंग लाई ना?” मेरे नाना ने गर्व से कहा, “हां बेटा, हमारी मेहनत का फल हमें जरूर मिलेगा। हमें बस धैर्य और मेहनत से काम करना चाहिए।”

फसल का उत्सव— फसलों की कटाई के बाद, गाँव में उत्सव का माहौल था। सभी किसान अपनी-अपनी फसलों की कटाई कर रहे थे और एक-दूसरे को बधाई दे रहे थे। गाँव के लोग खुशी से झूम उठे और हर घर में उत्सव मनाया जाने लगा। मामा ने मेरे और अपने परिवार के साथ इस उत्सव का आनंद लिया और सभी को आशीर्वाद दिया। उन्होंने गोपाल से कहा, “बेटा, यह हमारी मेहनत का फल है। हमें हमेशा मेहनत और लगन से काम करना चाहिए।”

भविष्य की योजना— मानसून सत्र के समाप्त होने के बाद, गाँव के लोग अपने भविष्य की योजनाएँ बनाने लगे। सभी ने अपनी-अपनी फसलों की बिक्री के लिए बाजार जाने की योजना बनाई और अपने परिवार के लिए अच्छे दिनों की उम्मीद करने लगे। मामा ने गोपाल और मुझसे कहा, “बेटा, हमें हमेशा अपने भविष्य की योजना बनानी चाहिए और मेहनत से काम करना चाहिए। हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए। इसी तरह हमेशा आगे बढ़ते रहो, खुश रहो।”



देव प्रताप सिंह,

पिता- शंकर लाल सिंह,
सहायक लेखा अधिकारी

कार्यालय कैंटीन में उपलब्ध व्यंजन



ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग क्या है? कार्बन — डाइऑक्साइड, मीथेन, क्लोरोफ्लोरोकार्बन इत्यादि ग्रीन हाउस गैस के बढ़ते स्तर की वजह से पृथ्वी के तापमान में लगातार होने वाली बढ़ोतरी को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। दुनिया में लगातार प्राकृतिक आपदाओं की संख्या बढ़ रही है। कहीं बाढ़ आ रही है तो कहीं सूखा हो रहा है। कहीं बिन मौसम तूफान आ रहे हैं तो कहीं जंगल में आग लग रही है। अत्यधिक गरमी के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं और समुद्र का जल स्तर बढ़ता जा रहा है, जिससे कई जगहों के जल में समा जाने का खतरा है। कुदरत अपना कहर बरपा रही है। यह एक चिंता का विषय बन गया है। आइए इसके बारे में विस्तार में बात करते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के कुछ महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हैं :-

वनों की कटाई— पौधे ऑक्सीजन का मुख्य स्रोत हैं। वे पर्यावरण से कार्बन—डाइऑक्साइड को अपने अंदर प्रकाशसंश्लेषण हेतु समाहित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिससे पर्यावरण का संतुलन बना हुआ है।

लेकिन अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए वनों को काटा जा रहा है, जिससे पर्यावरण में असंतुलन पैदा हो रहा है। कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि हो रही है और ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है।

वाहन का उपयोग— भले ही वाहन हमारे कहीं आने—जाने के लिए आवश्यक हैं, लेकिन ग्लोबल वार्मिंग का ये एक बड़ा कारण भी हैं। ये कई तरह की गैस उत्सर्जित करते हैं, जो वातावरण के लिए सही नहीं होती एवं यह गैस ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ावा देती हैं। वाहन बड़ी मात्रा में कार्बन—डाइऑक्साइड, कार्बोनमोनोऑक्साइड इत्यादि ग्रीन हाउस गैस वातावरण में छोड़ते हैं, जिस कारण तापमान में वृद्धि होती है।

बढ़ती आबादी— जनसंख्या का बढ़ना मतलब ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन का उपयोग होना और कार्बन—डाइऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि होना। इससे वातावरण में संतुलन बिगड़ता है और कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ती है, जो ग्रीन



हाउस गैस है।

ज्वालामुखी के फटने से बहुत भारी मात्रा में ग्रीन हाउस गैस निकलती है। यही नहीं जो लावा ज्वालामुखी से निकलता है उसकी गर्मी इतनी अधिक होती है कि उससे वातावरण के तापमान में वृद्धि होती है।

जंगल में आग लगने से भारी मात्रा में कार्बन-डाइऑक्साइड तथा कार्बोन-मोनोऑक्साइड रिलीज होते हैं जो ग्रीन हाउस गैस हैं। ग्रीन हाउस गैस सूर्य की गर्मी को सोख लेते हैं जिससे तापमान में वृद्धि होती जाती है।

औद्योगिक विकास— जब से औद्योगिक विकास का काल शुरू हुआ है, तब से वातावरण के संतुलन में गड़बड़ी प्रारंभ हुई है। ये फैक्ट्रीज से निकलने वाला धुआँ ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा स्रोत है और इसे रोकने के लिए फैक्ट्रीज में अनेक प्रकार के नियमों को बनाना बहुत जरूरी है।

ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने के अनेक उपाय हैं जैसे :— ग्लोबल वार्मिंग के लिए मुख्य उत्तरदायी गैस कार्बन-डाइऑक्साइड में कमी लाने

के लिए जीवाश्म ईंधन के उपयोग में कमी लानी होगी। इसके स्थान पर हरित ऊर्जा स्रोतों का अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए। वनों की कटाई पर रोक लगाना चाहिए तथा वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे वन क्षेत्र में विस्तार हो। क्लोरोफ्लोरोकार्बन जैसे मानवजनित घातक रसायनों के उत्पादन को सीमित करना तथा उनके जगह कम हानिकारक विकल्प ढूँढना। पर्यावरण प्रदूषण रोकने तथा ग्रीन हाउस गैसों के उत्पादन पर रोक लगाने वाले अंतर्राष्ट्रीय कानूनों एवं संधियों का कठोरतापूर्ण पालन तथा इनका उल्लंघन करने वाले देशों के विरुद्ध कड़े प्रतिबंध लगाने चाहिए। ग्रीनहाउस गैसों का सबसे अधिक उत्सर्जन करने वाले देशों को मानव जाति के हित में इन गैसों के उत्सर्जन में कटौती करनी चाहिए तथा पर्यावरण की सुरक्षा हेतु उचित उपाय करने चाहिए। कृषि उत्पादन में प्रयुक्त रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का सीमित उपयोग तथा जैविक खाद के अधिक प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए, क्योंकि ये जब जल स्रोत में जाकर मिलते हैं तो कोरल रीफ को काफी नुकसान पहुँचती है। उद्योगों एवं स्वचालित वाहनों में ऐसे उपकरणों को लगाया जाये, जिससे प्रदूषित गैसों का उत्सर्जन कम से कम हो तथा वायुमंडल में छोड़ने से पूर्व उनका परिष्कार हो सके। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि पर प्रभावी अंकुश लगाया जाना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों का कम से कम उपयोग तथा वैकल्पिक स्रोत का विकास करना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु जन-सहभागिता कार्यक्रमों को संचालित करना चाहिए।

अन्त में, मैं यह कहना चाहूँगा कि ये हमारी धरती है और हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए इसकी हिफाजत करनी चाहिए, हमसे ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए जो भी बन पड़े, हमें करना चाहिए।



आदित्य राज,

पिता- कृष्ण किशोर,
वरिष्ठ लेखाकार

पेपर लीक



कठिन परिश्रम सफलता की कुंजी है,
मेरा यह भ्रम अब दूर हुआ ।
कोशिशों के सोपान पर चढ़ कर,
मंजिल का सपना चूर हुआ ।।
उद्यम करने वाले छात्रों पर,
निराशाओं के बादल छाए हैं ।
नकल माफिया से दूषित तंत्र में,
आकांक्षाओं के पुष्प कुंभलाये हैं ।।
पेपर लीक की घटना ने,
सारा मनोबल तोड़ दिया ।
सफलता असफलता के भँवरों में,
खाने को गोता छोड़ दिया ।।
समर्थ और धनवान के बच्चे,
मनचाही सफलता पायेंगे।
परिश्रमी गरीब के बच्चे,
हाथ मलते रह जाएँगे ।।

लोलुपता के मद में अन्धे,
पक्षपाती द्रोण हैं पनप रहा।
परीक्षा के इस घोटाले में,
भविष्य भारत का है सिसक रहा ।।
राह सफलता की अब नहीं दिखती,
भगवान ऐसा कुछ खास करो।
जो बच्चों के भविष्य से खेले,
उन कौरवों का सर्वनाश करो ।।



अमिताभ सिंह,

पिता: अवध बिहारी सिंह,
सहायक लेखा अधिकारी





भिक्षा : एक सीख

पटना एक ऐसा शहर जहां प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को अपने हिस्से का कुछ-ना-कुछ मिल ही जाता है। एक पुराना शहर जहां अनेक महान व्यक्तियों ने कदम रखा। प्राचीन काल में इसे पाटलिपुत्र के नाम से जाना जाता था। तब इस शहर में गरीबी और असमानता तो थीं, परंतु भाईचारे का अभाव नहीं था। आज के परिदृश्य में देखा जाए तो यहाँ सभी का दम घुटता नजर आ रहा है। गरीबी और असमानता तो चरम पर पहुँच गई हैं और भाईचारा क्या होता है, लोग भूलते जा रहे हैं। सोहन, जिसका जन्म तो मध्य प्रदेश के एक छोटे से गाँव जगपुरा में हुआ था, परंतु दुर्भाग्य ने उसे ऐसी पटखनी दी कि वह अपने परिवार से सात वर्ष की उम्र में बिछड़ गया। जठराग्नि (पेट की आग) ने उसे ऐसी स्थिति में ला दिया कि वह कुछ भी खाने को तैयार था। उसे पता नहीं चलता कि खाना कूड़ेदान

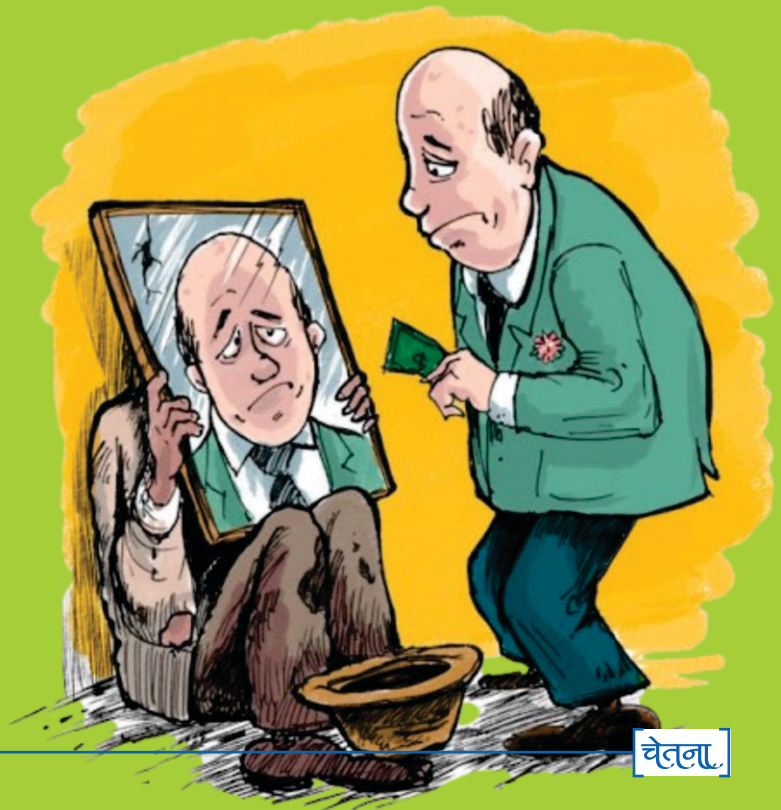
में पड़ा है या थाली में। जिंदगी उसे बहुत विवश कर दी। वह इधर-उधर घूमता और जैसे-तैसे अपना पेट भरने का प्रयास करता। धीरे-धीरे उसकी यह आदत भिक्षा मांगने का रूप ले लिया। "भिक्षा" जो आज के जमाने में लेना एक बहुत चालाकी का काम है। जब तक आप उस तरह का अपना वेश भूषा नहीं बनाएँगे, तब तक आपको आज कोई भिक्षा नहीं देगा। यह साबित करना पड़ेगा कि आप एकदम जरूरत मंद हैं तब जाकर आपको कोई कुछ देगा। सोहन भिक्षा मांगते-मांगते एक शहर से दूसरे शहर चला जाता था। ऐसे ही आवागमन में उसकी किस्मत ने उसे पटना शहर में लाकर खड़ा कर दिया। शहर ऐसा जहां पहले से ही हजारों बच्चे इसी कार्य में लगे हुए थे और गुजर-बसर कर रहे थे। सोहन भी यहाँ रहने लगा और अपना एक जगह चुन लिया, जहां वो दिनभर भिक्षा मांगने के बाद आराम करता था। पटना

पुलों का शहर है और उन्हीं में से एक पुल सोहन का महल था जहां वह अपनी जिंदगी बिता रहा था। लोगों का क्या, वो भिक्षा मांगने वाले को कुछ दें या ना दें लेकिन एक चीज जरूर देते हैं वो हैं बिल्कुल मुफ्त का सुझाव— “यह शरीर से तो अच्छा है, कहीं जाकर कुछ काम करो”। दस लोगों से मांगने पर एक या दो लोग कुछ पैसे देते। वह दिनभर घूमकर भिक्षा मांगता रहता था। भिक्षा मांगने वालों पर मौसम की भी बहुत मार पड़ती है। बारिश के मौसम में वे सो नहीं पाते और उनको रहने के भी लाले पड़ जाते हैं।

मंगलवार का दिन पटना में भिक्षा मांगने वालों के लिए एक बड़ा त्योहार के जैसे होता है और हो भी क्यों नहीं, वह जो हनुमान जी का दिन है। ऐसे ही एक मंगलवार को सोहन भी प्रातः काल उठकर हनुमान मंदिर के तरफ चल दिया। उसको क्या पता था कि यह शहर भी भिखारियों ने कई भागों में बाँट रखे हैं। वहाँ पहुँचने पर कई भिखारियों ने उसका विरोध किया और कहा कि तुम यहाँ से शांति से चले जाओ, इसी में ही तुम्हारी भलाई है। सोहन बेचारे को क्या पता कि हनुमान जी तो यहाँ हैं, लेकिन उसको उन भिखारियों से वो भी नहीं बचा सकते। इसलिए वह वहाँ से जाने में ही अपनी भलाई समझा। समय बीतता गया और सोहन का भी जीवन धीरे-धीरे एक नए रूप में उभरता गया। वह जब थोड़ा बड़ा हुआ तो उसको भिक्षा मांगते हुए शर्म आने लगी। वह इस कार्य को छोड़ दिया। वह अब मजदूरी करके अपना जीवन व्यतीत करने लगा।

एक दिन सोहन अपने काम पर जा रहा था। रास्ते में लगी भीड़ देखकर वह भी दौड़ पड़ा। एक अंधेड़ व्यक्ति दर्द से कराह रहा था। एक कार से रामू का दुर्घटना हो गया था। भीड़ में से कोई भी व्यक्ति उनकी सहायता नहीं कर रहा था, सब मूकदर्शक बनकर देख रहे थे। सोहन जल्दी से एक टैक्सी बुलाया और रामू को अस्पताल लेकर चल दिया। सोहन कुछ समय बाद अस्पताल से अपने काम पर चल दिया। काफी देर होने के चलते उसे मालिक का डांट सुनना पड़ा और उस दिन का आधा वेतन भी कट गया। दो दिनों बाद रामू को अस्पताल से छुट्टी मिल गई। वह अपने घर चले गए। अब वह सोहन के बारे में सोच रहे थे। कौन लड़का है? जिसको मैं

पहले कभी यहाँ देखा नहीं। सोहन से मिलने की उनकी उत्सुकता बढ़ती गई। लेकिन जिसका पता हो ही नहीं उससे कैसे मिला जाए। रामू अपना प्रयास जारी रखे। कुछ दिनों बाद दुर्घटना वाली स्थान के नजदीक पर उनकी सोहन से मुलाकात हो गई। रामू पूछे, कैसे हो बेटा? सोहन बोला मैं बिल्कुल ठीक हूँ। आप ठीक हैं, न? हाँ, ठीक हूँ। कहाँ रहते हो? सोहन इस प्रश्न का जवाब नहीं दिया। बात-चीत करने के उपरांत पता चला कि उसका यहाँ न तो अपना घर है और न ही परिवार। रामू को यह सुनकर बहुत दुख हुआ। सोहन का इतना सहज भाव देखकर उनको बहुत आश्चर्य भी हुआ। उनको लगा कि इस लड़के की सहायता करनी चाहिए। वह उसको अपने साथ ले जाना चाह रहे थे। शुरु में सोहन साथ जाने से मना कर दिया, लेकिन रामू के बहुत दबाव देने पर तैयार हो गया। रामू का अपना एक होटल था, जिसमें सोहन को रहने के लिए एक कमरा मिल गया जहां सभी दैनिक व्यवस्थाएं उपलब्ध थीं। सोहन उसी होटल में काम करने लगा। वह बहुत मेहनत करता था। कुछ ही दिनों में रामू को होटल से बहुत अच्छा लाभ होने लगा। रामू, सोहन के मेहनत से बहुत खुश हुआ। कुछ समय बाद वह सोहन को एक दूसरा होटल खोलकर सौंप दिया। सोहन बहुत ईमानदारी से काम करता और जितना भी पैसा रोज





कमाता, रामू को ले जाकर दे देता था। रामू इससे बहुत प्रसन्न हुआ और सोहन को वह होटल ही दे दिया। सोहन धीरे-धीरे और दो होटल खोल लिया। उसके पास अपार धन हो गया। वह हमेशा हनुमान मंदिर जाता था और भिक्षा मांगने वालों को बहुत कुछ देता था। जितने भी असहाय और जरूरतमंद उसके होटल में आते, सबको मुफ्त में भोजन कराता था। उसे भिक्षा मांगने वालों पर बहुत तरस आने लगी। उसने "सेवा संघ" नाम से एक आश्रम खोला, जिसमें सभी जरूरत मंदों को रखने लगा और उनकी पूरी देखभाल करने लगा। उसके संपर्क में जितने भी भिखारी आते उन सबको वह आश्रम में रखता। सोहन का यह नेक कार्य शहर में एक नई क्रांति ला दिया। अनेकों व्यक्ति उससे प्रेरित होकर असहाय और जरूरतमंदों की सहायता करने लगे।



जय प्रकाश विश्वकर्मा,
द्वारा उदय भान विश्वकर्मा,
कनिष्ठ अनुवादक



महालेखाकार महोदय की उपस्थिति में बेतिया में पेंशन अदालत का आयोजन



निराशा और मनुष्य

नहीं नहीं वह नहीं फरिश्ता
नहीं बोझ अरमानों का
जीने के बस छद्म बहाने
नहीं शौक बह जाने का
छोड़ो मुझको जीने दो
खुद को खुद से लड़ने दो
खुद के खुद में मिल जाने का
दर्द तनिक तो सीखने दो
नहीं अंधेरे सदा रहेंगे
बोझिल गगन के आंगन में
कभी तो निगलेगी कालिमा
कमरे में बंद रंगीन सितारे
जो नेक है वही नियत है
जो बने हैं वही चले हैं
जो गिरे हैं वही उठे हैं
जो सुने हैं वही गाये हैं
जो सोये थे वही जागे हैं
दुनिया का इतिहास बोलता
जो सीखा है वह आगे है।

छोड़ो इसको रहने दो
बंद मुँह से बोलने दो
गुप चुप गुप चुप खयाल लिए
इसको भी साथ में बहने दो

अट्टालिका सी जो दिखती है
नंगी आँखों को धोखा देकर
उनके नाते उनके रिश्ते और उनके
प्यार वफा
मतलब के इस्पात से बना छुक छुक
करती रेल है
उन रंग बिरंगे बिल्लियों का
तमंचे पे डिस्को खेल है
छोड़ो इसको खेलने दो
फिर से कुछ तो बोलने दो
तरु की तन्हाई क्षणिक भले
पर लम्हों की सदियों बन जाती
उठ पड़े गौरव के औत्सुक्य को
क्षण में पुलिंदा बना जाती
फिर ठिठुर ठिठुर जाड़े की मानवता
हृदयाघात से घबराती
फिर भी उसको नेह नहीं
फिर भी उस सा कोई देह नहीं
छोड़ो उसको भी रहने दो
साथ साथ उसको चलने दो
वह आशीष लिए निर्माता का
वह साथ लिए विधाता का
संग संग साथ निभायेगी
शायद ही कभी शर्माएगी
अमरत्व का वरदान लिए
केतु से घबराना क्यों?
सूझबूझ से आगे बढ़ना
मरणशील से डरना क्यों?
जो नेक है वही नियत है
जो बने हैं वही चले हैं
जो गिरे हैं वही उठे हैं
जो सुने हैं वही गाये हैं
जो सोये थे वही जागे हैं
दुनिया का इतिहास बोलता
जो सीखा है वह आगे है।



प्रतिभा कुमारी,

पति- रमेश कुमार रजक,
सहायक लेखा अधिकारी

दादा-पोता का प्रेम

भाग-1

प्रेम एक ऐसा एहसास है जो दिमाग से नहीं दिल से होता है। यह स्नेह से शुरू होता है और धीरे-धीरे खुशी की ओर बढ़ता चला जाता है। यह एक मजबूत, आकर्षक और निजी जुड़ाव की भावना है, जो सब भूलकर उसके साथ होने को प्रेरित करती है। कान्ता दास इसी प्रेम की भावना में सराबोर होकर लकी को याद करता रहता है। जब से लकी घर से सोलापुर गया है, कान्ता कुछ अच्छा महसूस नहीं करता है। वह अपने पोता लकी की यादों को कैसे भूल जाता। कहा जाता है कि “दादा और पोता के बीच का प्रेम पिता और पुत्र के प्रेम से प्रगाढ़ होता है”। लकी का जब जन्म हुआ था तो चार सदस्यों वाले परिवार में सबसे अधिक कान्ता दास को खुशी हुई थी। उसे लगा अब उसका अकेलापन दूर हो जाएगा। दादा और पोता साथ मिलकर खूब सारी बातें करेंगे। और हुआ ऐसा ही, कान्ता को लकी के बिना चैन नहीं पड़ता था। लकी के आने से मानो उसे एक नया जीवन मिल गया हो। लेकिन समय बीतता गया और उम्र बढ़ती गई। जब लकी पाँच वर्ष का हो गया तब उसके माता-पिता को उसकी पढ़ाई की चिंता सताने लगी। देहात (ग्रामीण क्षेत्र) में एक प्रचलित कहावत है कि “किसी को पढ़ाना है तो पढ़ाओ नहीं तो शहर में बसाओ”। इसका अर्थ यह है कि देहात में किसी को पढ़ाने से जितना ज्ञान प्राप्त होता है, उतना ज्ञान उसको शहर में रहने मात्र से मिल जाता है। सबसे उत्तम कार्य यह होगा कि किसी को शहर में रखकर पढ़ाया जाए तो सोने पर सुहागा मिलने जैसे हो जाएगा। इसी विचार को दिमाग में रखकर लकी के माता-पिता चाहते थे कि उसको शहर लेकर चला जाए, जिसका परिणाम था कि लकी अपने माता-पिता के साथ सोलापुर चला गया। रमा अपने पुत्र लकी का नामांकन शहर के एक प्रतिष्ठित विद्यालय में करा दिया। अब लकी का दिनचर्या बदल गया था। वह रोज विद्यालय जाता

और घर आने के कुछ समय पश्चात कोचिंग चला जाता। उसका जीवन इतना व्यस्त हो गया कि वह अपने दादा के प्रेम और स्नेह को धीरे-धीरे भूलने लगा। इधर कान्ता दास का जीवन बहुत कठिन हो गया था। वह हमेशा लकी के यादों में खोए रहता। वह अकेले में रोता और अपने आप को हमेशा कोसता रहता था कि मैं कितना अभागा हूँ, अपने पोता से अलग हो गया।

एक दिन लता रमा से बोली कि घर से आए चार वर्ष हो चुका है, चलिए अब कुछ दिन घर घूमकर आते हैं। रमा बोला कि लकी की परीक्षा है, कैसे चला जाएगा। हाँ, परीक्षा समाप्त होने के बाद विचार किया जाएगा। अंततः वो दिन आ गया जब लकी अपने दादा के पास जा रहा था। वह बहुत खुश था, लेकिन दादा से मिलने की भावना उतनी मजबूत नहीं थी जितनी बिछड़ने के समय थी। जब कान्ता को यह खबर मिली तो वह बहुत खुश हो गया। उसकी भावना बिछड़ने के समय जितनी मजबूत थी उससे कहीं ज्यादा इस समय मजबूत हो गई थी। जब लकी घर पहुंचा तो कान्ता उसे गले लगाकर रोने लगा। वह लकी को ऐसे गले लगा लिया जैसे कोई माँ अपने बच्चे को खोने के डर से लगाती है। लगभग पाँच मिनट बीत चुका था, लेकिन कान्ता अभी भी लकी को नहीं छोड़ा था। लकी भी अपने दादा के भावनाओं को महसूस कर रोने लगा। वह बोला, दादा अब मैं आपको छोड़कर



कहीं नहीं जाऊंगा। कान्ता एक लंबी सांस लेकर बोला हॉ बेटा मुझे छोड़कर मत जाना। शाम हो गई, लकी अपने दादा के साथ गाँव घूमने निकल गया। कान्ता ऐसा महसूस कर रहा था मानो उसे भगवान मिल गए हों। वह बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा था। जब कोई पूछता कैसे हो लकी? कब जाना है? कान्ता का जवाब होता लकी ठीक है और अब यहीं रहेगा, कहीं नहीं जाएगा। दादा-पोता पूरा गाँव घूमकर घर आ गए। साथ में दोनों शाम का भोजन किए और लकी अपने दादा के पास ही सो गया। कान्ता लकी को खूब निहारता और बार-बार आलिंगन कर चूम लेता था। उसने स्वयं से बोला मेरा बेटा ट्रेन में सफर कर बहुत थक गया है और लकी का हाथ-पैर दबाने लगा। कान्ता उस पूरी रात सोया नहीं, लकी को निहारता रहा। सुबह जब लकी जगा तो कान्ता वहीं बैठा था। लकी उसके गले लग गया जैसा प्रायः छोटे बच्चे सुबह जगने के

पश्चात करते हैं। कान्ता को जो सुख और आनंद का अनुभव हुआ, उसे शब्दों में उकेरना असंभव था।

दादा-पोता के दिन की शुरुआत और अंत हमेशा एक साथ ही होती थी। लकी को घर आए पंद्रह दिन बीत चुके थे। यह समय कैसे बिता, न तो कान्ता को पता चला और न ही लकी को। दोनों को लगा मानो ये समय पलक झपकते ही बीत गया हो। रमा बोला, पिताजी अब हमें चलना है, क्योंकि लकी का स्कूल भी शुरू हो जाएगा। कान्ता कुछ नहीं बोला। लकी कान्ता के तरफ देखने लगा और दौड़कर उसको पकड़ लिया। उसने ठान लिया कि इस बार दादा से उसे कोई अलग नहीं कर सकता। लेकिन "शहर की पढ़ाई" ने ऐसा होने नहीं दिया। अगले दिन लकी शहर को चल दिया। अब कान्ता का जीवन और पीड़ादायक हो गया। वह अंदर से बहुत टूट गया। उसकी तबीयत बिगड़ती गई। समय बीता लेकिन कान्ता की तबीयत में कोई सुधार नहीं हुआ। वह उन प्यारे लम्हों को याद करते हुए दुनिया को अलविदा कह गया।

भाग-2

लकी जल्दबाजी में घड़ी बांधते हुए बोला— 'नहीं मम्मा, आज नाश्ता नहीं करूंगा। ऑफिस जाने में बहुत देर हो जाएगा।' लेकिन लता कैसे मानती कि उसका बेटा बिन खाये ऑफिस चला जाए। वह लकी को अपने हाथों से जल्दी-जल्दी नाश्ता करा ही देती है। रमा बोली बेटा रोज बढ़िया से नाश्ता करने के बाद ऑफिस जाओ नहीं तो मेरे जैसे ही कमजोर हो जाओगे। रमा को शुगर और रक्तचाप की बीमारी हो गई थी, जिसके चलते उसको कई शारीरिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। अब वह काम पर नहीं जाता, घर पर ही रहता था। घर की सारी जिम्मेदारियाँ अब लकी के कंधों पर आ गई थीं। चारु, लकी के साथ ऑफिस में कार्य करती थी। दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते थे और शादी करने के भी इच्छुक थे। रमा इसके विरोध में था। लेकिन अंततः लकी और चारु एक-दूसरे के हो गए। अगले वर्ष घर में एक नया मेहमान का आगमन हुआ जिससे रमा बहुत खुश

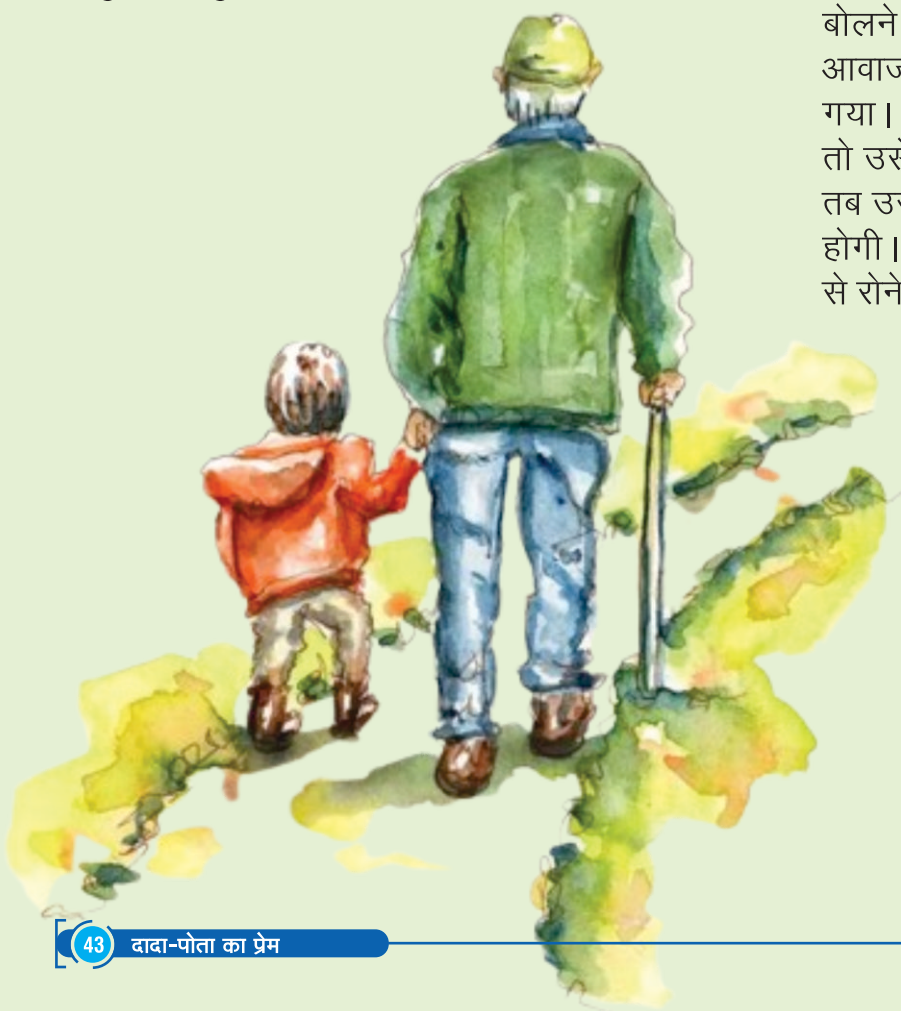


था। वह पहले जितना विरोध में था, अब उतना ही प्रेम अपने पोता के प्रति दिखाने लगा। रमा ने बहुत ही प्रेम से उसका नाम तेजस रखा। तेजस और रमा में प्यार और दोस्ती ऐसी हो गई जैसे पानी और मछली। रमा जो पहले कई बीमारियों के चलते ठीक नहीं रहता था, अब ऐसा हो गया मानो घर में वह सबसे स्वस्थ व्यक्ति है। उसकी सारी परेशानियाँ खत्म हो जाती जब तेजस उसके पास होता।

एक दिन लकी शाम को जब ऑफिस से घर लौटा तो उसके चेहरे पर बहुत खुशी झलक रही थी। वह घर आकर झूमते हुए रमा को गले से लगा लिया। 'क्या बात है बेटा जो तुम इतने प्रसन्न हो?' रमा ने पूछा। पापा मेरा और चारु का कंपनी ने पैकेज बढ़ा दिया है। रमा बोला— 'ये तो बहुत खुशी की बात है।' लकी आगे जोर से कहा— 'और कंपनी हम दोनों को अमेरिका भेज रही है।' ये बात सुनते ही रमा की खुशी गायब हो गई। उसका चेहरा उतर गया। रमा पूछा— क्यों यहाँ क्या समस्या है? अमेरिका जाना हम दोनों का सपना है। वहाँ की दुनिया बहुत अलग है। हमें अपने बच्चे का भविष्य

भी तो बेहतर करना है, जिसके लिए अमेरिका से अच्छा जगह कोई नहीं हो सकता। लता के कई बार कहने पर भी रमा उस शाम को खाना नहीं खाया। उसे लकी और चारु का अमेरिका जाने से ज्यादा समस्या नहीं थी, अपने पोता तेजस से बिछड़ने का डर ज्यादा सता रही थी।

लकी कपड़ा पहनते हुए बोला चारु बैग में सब समान ठीक से रख ली हो न। हमें अब निकलना होगा। समय ज्यादा नहीं है। तेजस कहाँ है? चारु बोली, वह अपने दादा के पास है। दादा कह रहे हैं कि वह नहीं जाएगा और रो रहे हैं। घर के गेट पर टैक्सी आकर लगी और लकी अपने माता-पिता का आशीर्वाद लेकर चारु और तेजस के साथ निकल गया। तेजस भी रमा से अलग होकर बहुत रो रहा था। दोनों को कुछ समय बाद जब हवाई अड्डा आया तो तेजस चुप हो गया। लेकिन रमा, तेजस को कैसे भूलता। वह बहुत दुखी हो गया था। लता भी बहुत दुखी थी। मानो ऐसा लग रहा था कि घर का सारा रौनक ही गायब हो गया है। कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। लता कुछ बोलने का प्रयास कर रही थी, लेकिन उसकी आवाज निकल नहीं पा रही थी। उसका गला रुँध गया। वह धीरे से बोली लकी जब पाँच वर्ष का था तो उसे हमलोग गाँव से सोलापुर लेकर चले आए। तब उसके दादा (कान्ता दास) को कितनी पीड़ा हुई होगी। यह बोलकर लता और रमा बहुत जोर-जोर से रोने लगे।



उदय भान विश्वकर्मा,
कनिष्ठ अनुवादक

बुरा मैं शिक्षक नहीं माँ.... बुरी ये दुनिया है

माँ का सपना था
शिक्षक बनो, सोच बदलो, देश बदलो
समाज सुधारो, बच्चों को संवारो
पर असमंजस में हूँ आज
क्या मैंने निभाया अपना काज
क्या एक को भी बदल पाया
या अभी भी है सभी के ऊपर बुराई का साया...

सच माँ कोशिश बहुत की... पर बदल ना सका किसी को...
क्योंकि बुरा मैं शिक्षक नहीं माँ.... बुरी ये दुनिया है।

पढ़ाया ईमानदारी और कुछ गणित के सवाल
कोशिश पूरी की.... कि रखा जाये उनका हर तरह से खयाल....
कभी नहीं सिखाया चोरी, मक्कारी और माँ बाप से धोखेबाजी
पर आज वे करते हैं ये सभी
और डाँटने पर दिखाते हैं सीनेबाजी

इस छोटी उमर में खुद को समझते हैं बुद्धिमान
और बोलते हैं अपने आप से झूठ...
इसी तरह उनके और उनके पढ़ाई के बीच आती है एक बड़ी फूट....
तुम सही थी माँ,
जमाना बदल गया है
मुझे माफ कर दो.... शायद सफल ना हो सका तुम्हारे दिये गए काज में
पर सच माँ
बुरा मैं शिक्षक नहीं.... बुरी ये दुनिया है।



दीपक कुमार,
आशुलिपिक ग्रेड II

लोकतंत्र : आम-जनता की शक्ति का महत्वपूर्ण स्तंभ

डेमोक्रेसी शब्द ग्रीक शब्द 'डेमो' और 'क्रेटोस' के गठजोड़ से बना है, जिसमें "डेमो" का तात्पर्य है आम-जनमानस के लिए और 'क्रेटोस' का अर्थ है सत्ता के लिए। उसी प्रकार लोकतन्त्र शब्द भी "लोक" और तंत्र शब्दों का गठजोड़ है, जिसमें लोक का अर्थ है— जनता और तंत्र का अर्थ है शासन। अतः लोकतंत्र को जनता की शक्ति का महत्वपूर्ण स्तम्भ माना जा सकता है।

भारत में प्राचीन काल से ही लोकतान्त्रिक व्यवस्था विद्यमान थी, जिसका प्रमाण अनेकों अभिलेखों से मिलता है। वर्तमान में संसद की तरह प्राचीन काल में भी परिषदों का निर्माण किया जाता था, जो वर्तमान संसदीय प्रणाली से काफी हद तक समान प्रतीत होता है। लोकतन्त्र भारत जैसे विशाल जन-मानस वाले देश के लिए अति महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह नागरिकों को सशक्त बनाता है, उनके समावेशी विकास को प्रोत्साहित करता है। लोकतंत्र एक ऐसी पद्धति है, जिसमें शासकों की शक्ति जनता के हाथ में होती है। यह ऐसी शासन प्रणाली है, जिसमें लोगों की भागीदारी ही सत्ता के केंद्र-बिन्दु होते हैं।

इतिहास

लोकतंत्र की उत्पत्ति विभिन्न समयों और स्थानों पर हुई, लेकिन ऐसा माना जाता है कि इसकी शुरुआत यूनानियों द्वारा ग्रीस में की गई थी। ग्रीस के एथेंस नामक शहर में 5वीं सदी ईसा पूर्व में सोलोन, क्लिस्थेनीज, और पेरिकलीज जैसे महान विचारकों ने लोकतंत्र की नींव रखी। हमारे देश भारत में भी लोकतंत्र की चर्चा प्राचीन काल से ही वेद, उपनिषदों में पाई जाती है। विशेष रूप से, आधुनिक भारत के स्वतंत्रता संग्राम में लोकतंत्र का बहुत महत्व था। 15 अगस्त 1947 ई० को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई तथा 26 जनवरी 1950 ई० को उसने संविधान स्वीकार कर लिया तथा विश्व के समक्ष स्वयं को एक लोकतांत्रिक देश घोषित कर दिया।

लोकतंत्र के प्रकार

इसके दो प्रकार हैं— प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अथवा प्रतिनिधि लोकतंत्र

प्रत्यक्ष लोकतंत्र— प्राचीन समय में प्रत्यक्ष लोकतंत्र में, सभी 'योग्य' नागरिकों को सभी राजनीतिक

निर्णयों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। परंतु आज के परिदृश्य में, राज्य के लिए निर्णय लेने में हर योग्य व्यक्ति को शामिल करना एक कठिन कार्य है। इसलिए, यह केवल आनुपातिक आबादी वाले एक छोटे से क्षेत्र में ही किया जा सकता है। लोकतंत्र की इस पद्धति का पालन करने वाला एकमात्र देश स्विट्जरलैंड है।

अप्रत्यक्ष प्रतिनिधि लोकतंत्र— अप्रत्यक्ष अथवा प्रतिनिधि लोकतंत्र का ऐसा रूप है जिसमें आम-जनता अपने नेताओं को चुनती है। आमतौर पर, लोकतंत्र की यह व्यवस्था विशाल जनसंख्या वाले देशों में प्रचलित है। लगभग 60% देश लोकतंत्र के इस प्रणाली का पालन करते हैं, जिनमें अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस के साथ-साथ भारत भी शामिल है, जो सबसे बड़े प्रतिनिधि लोकतंत्र का प्रमुख उदाहरण है। उपरोक्त दोनों लोकतंत्र के अलावा, विश्व के कुछ हिस्सों में शासन के कुछ अन्य तरीके विकसित हुए हैं जैसे साम्यवाद, तानाशाही आदि।

तानाशाही— शासन की ऐसी पद्धति है जिसमें सत्ता में देश का एक ही आदमी लगभग हर चीज पर शासन करता है और उसकी बातों का लोग और सरकार बिना किसी विरोध के, आँख मूंदकर पालन करते हैं। दूसरी ओर साम्यवाद एक ऐसा समुदाय है जो एक नेता को दूसरे से श्रेष्ठ दिखाने की कोशिश करता है। लोकतंत्र के आदर्श

1. **सामाजिक प्रगति**: लोकतंत्र समाजिक मुद्दों को पता करने और शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, और गरीबी उन्मूलन को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों के रूपांतरण के लिए मंच प्रदान करता है। यह राष्ट्र के कल्याण और विकास में योगदान करता है।
2. **आर्थिक उन्नति**: लोकतंत्र एक स्थिर राजनीतिक परिवेश प्रदान करता है जो आर्थिक विकास और उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करता है। यह निवेश, नवाचार, और उद्यमिता को प्रोत्साहित करता है, जिससे नौकरियों की स्थापना होती है और आम जनता के जीवन मानकों में सुधार का कार्य करता है।



3. **सामाजिक समावेशिता:** लोकतंत्र सभी नागरिकों को समान मताधिकार प्रदान करके सामाजिक समावेशिता को बढ़ावा देता है, चाहे वे जाति, धर्म, लिंग, या आर्थिक स्थिति के हों। यह निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में विविध आवाजों को समर्थन देने के लिए मंच प्रदान करता है।
4. **जवाबदेही और पारदर्शिता:** लोकतंत्र द्वारा सरकार और उसके प्रतिनिधियों से उनके जिम्मेदारी के प्रति उनकी जवाबदेही की मांग की जाती है जो नियमित चुनाव निर्वाचित नेताओं, अधिकारियों के बीच जिम्मेदारी की भावना पैदा करते हैं, ताकि वे अपने मतदाताओं के साथ किए गए वादों को पूरा करें। साथ ही, पारदर्शी गवर्नेंस में भ्रष्टाचार और शक्ति का दुरुपयोग को रोकने में मदद करें।
5. **विवादों का शांतिपूर्ण समाधान:** संवाद, समझौते, और शांतिपूर्ण प्रक्रियाओं के माध्यम से लोकतंत्र विवादों और विभिन्नताओं का समाधान करने में सशक्त होता है। यह विविध देशों में, लोकतंत्र पर चर्चा और वाद-विवाद के लिए मंच प्रदान करता है, जिससे नागरिक साहित्यिक रूप से भी अपनी चिंताओं का समाधान कर सकते हैं।
6. **अल्पसंख्यकों की सुरक्षा:** भारत एक बहु-धार्मिक और बहु-जातिवादी राष्ट्र है। लोकतंत्र अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करता है और किसी एक समूह की प्रधानता को रोकने और धार्मिक और सांस्कृतिक सदभाव को प्रोत्साहित करता है।
7. **कानून का शासन:** लोकतंत्र कानून के शासन को मजबूती देता है, यह सुनिश्चित करता है कि कानून नागरिकों के अधिकारों

की रक्षा करने और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पारित किए जाएँ। यह कभी भी केवल कुछ लोगों के हाथ में शक्ति का संघटन नहीं होने देता और निगरानी और संतुलन की प्रक्रिया स्थापित करता है।

8. **अंतर्राष्ट्रीय मान्यता:** भारत में लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता उसकी अंतर्राष्ट्रीय छवि को मजबूती प्रदान करती है और उसे अन्य लोकतांत्रिक राष्ट्रों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में अहम योगदान करती है।

निष्कर्ष : लोकतंत्र ने भारत में नागरिकों को स्वतंत्रता, सहभागिता, और समानता का अधिकार प्रदान किया है। लोकतंत्र ने भारत को एक बड़े और विविध समुदाय की सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर में सामंजस्य और विविधता की मूलभूत सिद्धांतों का पालन करने का मार्ग प्रदान किया है। भारत, अपने समाज में व्याप्त तमाम तरह की असमानताओं के बावजूद एक सफल लोकतांत्रिक राष्ट्र है और यही लोकतंत्र की खूबसूरती है जो हमारे समाज को एक साथ हाथ में हाथ डालकर आगे बढ़ाता है।



नरेन्द्र कुमार सिंह,

पुत्र : नीतीश कुमार,

लेखाकार



हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते उच्च अधिकारीगण





ऑनलाइन पढ़ाई का छात्रों पर दुष्प्रभाव

आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में ऑनलाइन पढ़ाई कोई नई बात नहीं रह गयी है। जहां इसके कुछ फायदे हैं, वहाँ इसके बहुत नुकसान भी हैं, जो अधोलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट होते हैं—

सामाजिक अलगाव:— महान यूनानी दार्शनिक अरस्तू के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा जो मनुष्य समाज में नहीं रहता वह या तो पशु है या देवता। कई शोधों से यह पता चला है कि समाज से अलग रहने वाले बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जहां ऑफलाइन पढ़ाई में बहुत सारे बच्चे एक साथ बैठकर पढ़ाई करते हैं जो उनकी सामाजिक मेल-जोल को बढ़ाता है और भविष्य में समाज में रहने लायक आवश्यक गुणों में उत्तरोत्तर वृद्धि में सहायक होती है। वहीं ऑनलाइन पढ़ाई में छात्र अपने साथियों और शिक्षकों के साथ सीधे संपर्क में नहीं होते हैं, जो उनके सामाजिक कौशल को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। सामाजिक संपर्क में कमी होना छात्रों के मानसिक विकास के लिए भी हानिकारक होता है। कहा जाता है कि मनुष्य से ही समाज का निर्माण होता है जो राष्ट्र की नींव है। ऑनलाइन पढ़ाई से छात्र वृहत रूप से सामाजिक अलगाव की समस्या से प्रभावित होंगे, जो भविष्य में कमजोर तथा एक दूसरे से अलग-थलग समाज का निर्माण करेंगे। संक्षिप्त शब्दों में कहें तो ऑनलाइन पढ़ाई समाज को भविष्य में खोखला कर देगी जो एक बहुत बड़ा खतरा है।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ:— कहा जाता है कि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है तथा इसका विपरीत भी उतना ही सत्य है, अर्थात् यदि मन अस्वस्थ हो तो उसका प्रतिकूल प्रभाव शारीरिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है पहला सुख निरोगी काया। ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान छात्रों को अपने मोबाइल, टैब अथवा लैपटॉप के स्क्रीन को लगातार देखना

पड़ता है। डाक्टरों के अनुसार स्क्रीन से लगातार निकलने वाली हानिकारक विकिरणों के कारण आंखों में जलन, आँख के लेंस में खराबी, आँख के पानी का सूख जाना, सर में दर्द हो जाना इत्यादि समस्याएँ छात्रों में सामान्यतः देखी जा रही है। स्क्रीन को लगातार देखने के कारण छात्रों की एकाग्रता में भी कमी तथा चिड़चिड़ापन देखा जा रहा है। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि ऑनलाइन पढ़ाई से छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, जिसके फलस्वरूप उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है, जो न केवल छात्र बल्कि उससे जुड़े उनके परिवारजनों को भी अपनी चपेट में ले रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि ऑनलाइन पढ़ाई छात्रों के भविष्य के लिए घातक है।

तकनीकी समस्याएँ— अपने देश में वर्तमान समय तक भी दूर-दराज के गाँवों, कस्बों में इंटरनेट की बेहतर पहुँच नहीं बन पायी है। कई स्थितिओं में तो शहरों को भी इंटरनेट की धीमी गति की समस्या से दो-चार होना पड़ता है। ऐसी स्थिति में ऑनलाइन पढ़ाई में वीडियो की खराब गुणवत्ता, ऑडिओ की समस्या इत्यादि होती है। कई स्थितियों में शिक्षक बोलते हुए आगे निकल जाते हैं और उनकी आवाज बाद में सुनाई देती है। कई स्थितिओं में ऑडिओ-वीडियो मैच नहीं होती है, अर्थात् शिक्षक बोल कुछ रहे होते हैं और लिखते हुए कुछ और ही प्रतीत होते हैं। इन स्थितियों के कारण छात्र-छात्राओं की पढ़ाई में बाधा उत्पन्न होती है, जो ऑनलाइन पढ़ाई की बहुत बड़ी खामी है।

अनुशासन की कमी:— जिस प्रकार पतंग को सतत् रूप से ऊँचाई पर बने रहने के लिए उसका





धागे से बंधा होना आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य को ऊंचाई पर जाने तथा उस ऊंचाई को सतत रूप से बरकरार रखने के लिए उसका अनुशासन रूपी धागे में बंधा होना आवश्यक है। जिस प्रकार ऊंचाई पर उड़ रहे पतंग के धागे को काट देने पर पतंग स्वतः ही नीचे चला जाता है, उसी प्रकार अनुशासन की कमी होने पर मनुष्य अधोगामी हो जाता है। अर्थात् उसका पतन होना प्रारम्भ हो जाता है। यदि छात्र जीवन की बात करें तो अनुशासन अत्यंत ही आवश्यक है। यह किसी छात्र को अपने जीवन में ऊंचाई पर ले जाने की प्रथम सीढ़ी है। छात्रों को किसी भी क्षेत्र में सफल होना हो तो उसमें अनुशासन की महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। मनु भाकर द्वारा हाल ही में 10 मीटर शूटिंग रेंज में ब्रांज मेडल लाना इसका जीवंत उदाहरण है। ऑफलाइन पढ़ाई के दौरान छात्र शिक्षक की नजरों के सामने होते हैं। यदि छात्र की इच्छा हो तो भी वे शिक्षक के सामने किसी भी तरह की उदंडता का साहस नहीं कर पाते हैं। शिक्षक द्वारा व्हाइटबोर्ड या ब्लैकबोर्ड पर लिखे विषय से संबंधित तथ्यों को अपने कॉपी में नोट करना छात्रों की बाध्यता होती है। अर्थात् यदि सरल शब्दों में कहें तो ऑफलाइन पढ़ाई के दौरान छात्रों को अनुशासन में रहना पड़ता है। ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान छात्रों पर किसी भी तरह की कोई बाध्यता नहीं होती है। कई अभिभावकों से बात करने पर यह भी पता चला है कि छात्र ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान लॉग इन तो कर लेते हैं, परंतु उसके बाद पढ़ाई पर ध्यान ही नहीं देते हैं। उधर शिक्षक पढ़ा रहे होते हैं और इधर छात्र अन्य गतिविधियों यथा सोना, बात करना, मोबाइल पर ही वीडियो गेम खेलने लग जाना इत्यादि में लिप्त हो जाते हैं। शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक शोध से यह पता चला है कि रीढ़ की हड्डी सीधी करके पढ़ने से दिमाग ज्यादा सक्रिय एवं मन अधिक एकाग्र होता है। जहां ऑफलाइन पढ़ाई के दौरान छात्र को बेंच पर सीधे बैठकर पढ़ने की बाध्यता होती है, वहीं

ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान छात्रों पर ऐसी कोई बाध्यता नहीं होती है। कई स्थितियों में तो छात्र लेटे हुए भी वीडियो देख रहे होते हैं। ये सभी कृत्य अनुशासनहीनता की निशानी हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान छात्रों में अनुशासन की कमी हो जाती है जो उनके सर्वांगीण विकास में बाधक है।

संवाद की कमी:— मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अध्ययन से यह पता चला है कि आपसी संवाद कई समस्याओं का आसान हल है। ढेर सारी समस्याएँ आपसी संवाद से ही आसानी से सुलझ जाती हैं। ऑफलाइन पढ़ाई के दौरान यदि छात्रों को विषय से संबंधित कोई बिंदु समझ में नहीं आ रहा हो तो वे शिक्षक से सीधे संवाद कर सकते हैं। शिक्षक भी उसी समय उनकी समस्या का समाधान कर सकते हैं, जबकि ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान शिक्षक-छात्रों के बीच सीधा संवाद स्थापित नहीं हो पाता है। छात्र जब तक टाइप कर अपनी समस्या पूछते हैं, तब तक शिक्षक आगे निकल जाते हैं, जिससे छात्र की विषय पर विस्तृत समझ विकसित नहीं हो पाती है। अतः हम कह सकते हैं कि ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान छात्र-शिक्षक के बीच संवाद की कमी होती है, जो छात्र के विकास में बाधक है।



सोनल स्वराज,

सहायक लेखा अधिकारी





मेघ आए

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाजें-खिड़कियाँ खुलने लगी गली-गली।
पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।।

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए।
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
बरस बाद सुधि लीन्हीं –
बोली अकुलाई लता ओट हो किवाड़ की।
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।।

क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी,
क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की।
बाँध टूटा झर-झर मेलन के अश्रु ढरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।।



नायला समरीन,

पिता- मो० आफताब अंसारी,
सहायक पर्यवेक्षक

वार्षिक खेलकूद-2024 में भाग लेते प्रतिभागी



वार्षिक खेलकूद-2024 के क्रिकेट टूर्नामेंट में
लेखा एवं हकदारी कार्यालय के विजेता टीम ट्रॉफी के साथ

भागलपुर का जर्दालू आम

